चन्दामामा
अगस्त १९६६
75 P

चांद उगा है, फूल खिला है
कदम गाछ तर कौन ?
नाच रहे हैं हाथी-घोड़े
व्याह करेगा कौन ?

ताँती के घर बेंग बसा है
ढोंसा को है तोन्द !
खाता-पीता मौज उड़ाता
गाना गाता कौन ?

हँसी के इस फुहारे को छोड़ते ही करोड़ों-करोड़ शिशुओं के खिलखिलाते प्रफुल्लित चेहरे नजर के सामने उभर आते हैं।

प्रगतिशील भारत में शिशुओं के स्वास्थ्य को आकर्षक बनाये रखने के लिये 'डाबर' ने तरह-तरह के प्रयोग एवं परीक्षण के बाद—'डाबर जन्म-घूँटी' का निर्माण किया है।

डाबर जन्मघूंटी

शिशुओं के सभी प्रकार के रोगों में व्यवहार की जाती है।

डाबर (डा. एस. के. बर्म्मन) प्रा. लि., कलकत्ता-२६

WPS

चन्दामामा
संचालक: चक्रपाणी
मुगल साम्राज्य का उदय और अस्त भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय है। हम कई मास से इसका इतिहास धारावाहिक रूप से देते आ रहे हैं। इस मास इसके ह्रास का वृत्तान्त दिया जा रहा है।
"चन्दामामा" को विशेषतः शिक्षाप्रद बनाने के लिए हम "भारत का इतिहास" दे रहे हैं।
वर्ष: १७ अगस्त १९६६ अंक: १२
CHITRA

भारत का इतिहास

३ मार्च १७०७ को औरन्गजेब की मौत हो गई। तुरत मुगल साम्राज्य का ह्रास होने लगा। उसके तीनों लड़के गद्दी के लिए एक दूसरे को मारने लगे। बड़ा लड़का मुअज्जम काबुल में, दूसरा आजम गुजरात में और तीसरा कामबक्स बीजापुर में गवर्नर थे। ये लोग अवश्य आपस में लड़ेंगे इसलिए ही अपने वसीयतनामे में औरन्गजेब ने अपना साम्राज्य तीनों में बाँट दिया था। पिता की इच्छानुसार मुअज्जम भी साम्राज्य का विभाजन करना चाहता था। पर दूसरा आजम इसके लिए न माना। १७०७ जून में दोनों आगरा के पास जाजौ में युद्ध के लिए सन्नद्ध हो गये। उस युद्ध में आजम हारा ही नहीं, बल्कि मारा भी गया। इसके कुछ दिनों बाद मुअज्जम कामबक्स से हैदराबाद के पास लड़ा। उस युद्ध में भी वह जीता। कामबक्स घायल हुआ। १७०८ में उसकी मौत हो गई।

बहादुर शा नाम से मुअज्जम गद्दी पर आया। उसकी तभी काफ़ी उम्र हो चुकी थी। वह मुगल साम्राज्य के ह्रास को न रोक सका। १७१२ फरवरी २७ में जब उसकी मौत हो गई, तो उसके चारों लड़के गद्दी के लिए लड़ने लगे। जब युद्ध में तीनों मार दिये गये, तो बड़ा लड़का बहादुरशाह जुलफिकरखान की मदद से, तख्त पर आया। जुलफिकरखान उसका मुख्य मन्त्री बना।

परन्तु बहादुरशाह लाल कुमारी नाम की स्त्री के हाथ में कठपुतला था। उसने नाचने गानेवालों को पूरी छूट दे दी। आखिर उसके भाई के लड़के फरुखसियर

ने उसे दिल्ली के किले में गला घोटकर मार दिया। १७१३ में वह गद्दी पर आया और उसने जुलफिकरखान को फांसी पर चढ़ा दिया।

फरुखसियर के बादशाह बनने के लिए दो सैय्यद भाइयां, हुसेनअलि अब्दुल्ला ने मदद की। शासन की बागडोर भी उन्हीं के हाथ में थी। फरुखसियर नलायक और डरपोक था। मिर जुल्ला आदि से उसने सैय्यदों के खिलाफ़ सलाह सुनी। सैय्यद भाइयों के प्रति उसने कृतज्ञता भी न दिखाई। उन्होंने उसकी आँखें निकलवा दीं। वह उनके हाथ बुरी मौत मरा।

फिर सैय्यद भाइयों ने नाम मात्र के लिए किसी को गद्दी पर बिठाया और स्वयं राज्य करने लगे। उनकी सहायता से जो गद्दी पर आये थे, उनमें से बहादुरशाह के चौथे लड़के के लड़के रोशन अख्तर ने सैय्यद भाइयों का विरोध किया। यह महमद शा नाम से बादशाह बना और दक्खिन के नवाब निज़ामुल मुल्क की मदद से उसने उनको खतम करवा दिया।

अहम्मद शा बहुत दिन गद्दी पर रहा, पर वह भी मुगल साम्राज्य के ह्रास को न रोक सका। दक्खन, अवध, बेन्गाल साम्राज्य से विच्छिन्न हो गये। मराठे, आगरा प्रान्त की जातियाँ, पंजाब के सिख सब इस प्रकार रहने लगे, जैसे वे स्वतन्त्र हों। और इस बीच नादिर शाह ने दिल्ली पर हमला किया औरन्गजेब के तीस साल बाद ही सारा मुगल साम्राज्य जाता रहा।

नादिर शाह फारस से भारत पर हमला करता आया। उसका काबुल, पंजाब आदि के गर्वनरों ने मुकाबला करने की कोशिश की। उन्होंने दिल्ली को कुमुक

भेजने के लिए लिखा। दिल्ली में तख्त के लिए इस तरह दाँव पैंतरें चल रहे थे, किसी ने उनका रोना न सुना।

नादिर शाह शुरु शुरु में, चोरों का सरदार था, दिक्कतें झेल झेलकर, उसने बहादुरी अपनाई थी। उसने फारस की अफ़गानों से रक्षा की। इसके कुछ दिनों बाद, वह फारस का बादशाह बना। १७३८ में, वह भारत देश की ओर निकला। १७३९ तक उसने ग़जनी, काबूल, लाहौर आदि पकड़ लिये। फिर भी दिल्ली के दरबार ने होश न सम्भाले। जब नादिर शाह की सेनायें दिल्ली के पास आईं, तो वे चेते, १७३९ में, मुगल सेना और फारस की सेना में युद्ध हुआ। बादशाह हार गया और सन्धि के लिए बातें करने लगा।

पहिले तो दिल्ली शान्त थी। पर किसी ने अफ़वाह उड़ा दी कि नादिर शाह मर गया था, दिल्ली के लोगों ने फारस के कुछ सिपाहियों को मारा। नादिर शाह यह सुन बड़ा नाराज़ हुआ, उसने दिल्लीवालों को कत्ल करने का हुकम दिया। सवेरे आठ बजे से, तीन बजे तक यह कत्ले आम चलता रहा। स्त्रियों को गुलाम बना लिया गया। घर जला दिये गये, जो मर गये थे, उनको भले ही वे हिन्दू हों या मुसलमान साथ दफ़ना दिया गया। दिल्ली की प्रजा से, तीन करोड़ रुपया वसूला गया।

नादिर शाह कोहिनूर हीरा और मयूर सिंहासन लेकर, खज़ाना खाली करके चला गया। सिन्धु नदी के प्रान्त पर फारस का कब्जा हो गया।

नेहरू की कथा

[२५]

अखिल भारतीय अधिवेषन में संविधान तो आसानी से बन गया। पार्लियामेन्टरी संविधान, प्रजातन्त्र के मूल सिद्धान्त सबको विदित थे ही, इसलिए कोई कठिनाई न हुई।

परन्तु जब धार्मिक वर्गों की समस्या या अल्प मतवालों की समस्या उठी, तो वह बहुत उलझ गई। जब वह सुलझती न लगी, तो मोतीलाल को अध्यक्ष बनाकर, एक कमेटी बनाई गई। उसमें तेज बहादुर सप्रू भी थे। उस कमेटी को नेहरू कमेटी कहा गया और उसकी रिपोर्ट को नेहरू रिपोर्ट।

जवाहर उस कमेटी के तो सदस्य न थे चूँकि वे कान्ग्रेस के प्रधान मन्त्री थे, इसलिए उनको उसके साथ रहना पड़ा। जवाहरलाल नेहरू का ख्याल था, जब स्वतन्त्रता प्राप्ति की समस्या मुख्य थी, तो कानूनी बातों में उलझना बिल्कुल व्यर्थ था। यही नहीं, कमेटी में तरह तरह के लोग थे। वे डोमिनियन स्टेटस से अधिक कुछ न चाहते थे।

नेहरू रिपोर्ट तैयार हो गई। उस पर चर्चा के लिए सर्व पार्टी सम्मेलन लखनऊ में हुआ।

जो पूर्ण स्वतन्त्रता से कम कुछ नहीं चाहते थे, जैसे जवाहर स्वयं थे, दुविधा में पड़ गये। रिपोर्ट में पूर्ण स्वतन्त्रता के विपक्ष में भी कुछ बातें थीं। यदि उनकी कड़ी आलोचना की जाती, तो डर था कि धार्मिक एकता के लिए जो प्रयत्न किया जा रहा था, उनको धक्का पहुँचता।

सर्व पार्टी सम्मेलन में ज़मीन्दारों के ज़मीन्दारी के अधिकारों का समर्थन हुआ—इस आधार पर ही संविधान तैयार किया गया। यह जवाहरलाल नेहरू को हरगिज़ पसन्द न था।

कान्ग्रेस के नेताओं का भी, कान्ग्रेस विरोधियों की तरह, रईसों से सांठ गाँठ करना और प्रगतिवादियों की उपेक्षा करना जवाहरलाल नेहरू को बड़ा अखरा और उन्होंने अपने पद से, इस्तीफा दे दिया। इसी कारण सुभास बोस ने भी इस्तीफा दे दिया। परन्तु कार्यकारिणी समिति ने जवाहर से यह इस्तीफा वापिस करवाया।

इस बीच साइमन कमिशन देश में "साइमन गो बेक" के नारे और काले झण्डों के स्वागत के बावजूद देश का दौरा कर रहा था। कहीं कहीं भीड़ और पोलीस में मुठभेड़ भी हुई।

पर जो लाहौर में हुआ, उसे देख सारा देश चौंक पड़ा। साईमन कमीशन के विरुद्ध जो जलूस वहाँ निकला, उसमें एक पोलीस कर्मचारी ने लाजपतराय को मारा, वे कई हज़ार लोगों के सामने खड़े थे। न उन्होंने ही कोई हिंसा का कार्य किया था, न उनके अनुयायियों ने ही। वे शान्त खड़े थे, पर लाजपतराय और उनके साथियों पर पोलीस ने लाठी चलाई।

हड़तालियों और पोलीस में मुठभेड़ हो और उसमें किसी को चोट लगे, तो कोई बड़ी बात नहीं है। परन्तु लाजपतराय के साथ जो पोलीस का व्यवहार रहा, वह पूरी तरह राक्षसीय ही था। उस नेता को क्या चोट लगी, मानों सारे देश को चोट लगी और सारा देश उत्तेजित हो उठा।

लाजपतराय हृदय के रोगी थे। वृद्ध थे। इसलिए वे चोटें और भी खतरनाक साबित हुईं। इसके कुछ दिनों बाद उनकी मृत्यु हो गई। डाक्टर ने कहा कि चोटें भी उनकी मृत्यु के कारण थे।

लोगों ने बदला लेने की ठानी और भगतसिंह ने यह बदला लिया भी। वह कोई मामूली क्रान्तिकारी मात्र न था। लोगों ने उस पर गीत लिखे। उसका नाम गाँव गाँव में गूँजने लगा।

इस घटना के बाद और लाजपतराय की मृत्यु के बाद, साईमन कमीशन जहाँ जहाँ गया, उसके विरुद्ध आन्दोलन भी और तीव्र होता गया।

साईमन कमीशन लखनऊ आ रहा था, स्थानीय कान्ग्रेस कमेटीवाले बहुत दिन पहिले से ही, बड़ा जलूस, मीटिन्ग और प्रदर्शन आदि की तैयारी कर रहे थे।

जवाहर ने स्वयं जाकर इस जलूस का रिहर्सल देखा। वे बड़ी शान्तिपूर्वक बड़े पैमाने पर हुए। यह देख कर्मचारी क्रुद्ध हुए। उन्होंने जलूसों को कहीं कहीं निषिद्ध कर दिया।

कहीं कहीं दमन की कार्यवाही की गई। इसके लिए बहाना यह था कि गाड़ी आदि के आमद रफ्त में रुकावट पैदा की गई थी।

कान्ग्रेस ने इस बहाने के लिए भी मौका न दिया। उन्होंने जलूस को सोलह सोलह आदमियों की टुकड़ियों में बाँट दिया और वे एक एक जत्थे में सभा स्थल पर गये।

एक एक जत्थे के साथ एक एक झण्डा था। जवाहर भी झण्डा पकड़कर एक जत्थे के साथ गये।

सड़क सुन सान-सी थी। जवाहरलाल नेहरू का जत्था अभी एक फर्लान्ग गया था कि नहीं, तीन चार दर्जन पोलीसवाले पीछे से आये। उनके हमले से, जत्था तितर बितर हो गया। वालन्टियर सड़क के दोनों तरफ़ चले गये। कुछ दुकानों में घुस गये। पोलीस ने काफी देर तक उनको खूब पीटा।

जवाहर ने भी बचकर, अपनी रक्षा करनी चाही, पर जहाँ वे खड़े थे, वे वहाँ से हिले नहीं। पहिले पोलीस के हमले से वे बच गये। फिर उन्होंने देखा कि पोलीस उनके साथियों पर लाठी चला रही थी। उन्होंने सड़क के किनारे जाना चाहा।

पर उन्होंने अपने को रोक लिया और वे वहीं खड़े हो गये।

उसी समय उन्होंने देखा एक पोलीसवाला हाथ में लाठी घुमाता उनकी ओर आया। "खैर जो हो सो हो" यह सोचकर जवाहरलाल ने अपना मुँह एक तरफ़ फेर लिया। पोलीस ने उनकी पीठ पर दो बार जोर से मारा। वे स्तब्ध रह गये। सारा शरीर काँप उठा। पर उनको यह जान सन्तोष हुआ कि वे अभी खड़े रह सकते थे।

फिर पोलीसवाले रास्ता रोककर खड़े हो गये। स्वयंसेवक भी एक जगह जमा हो गये और सड़क पर धरना देकर बैठ गये। कई के सिर फूट गये थे। कई खून से लथपथ थे। अन्धेरा हो गया। आखिर कर्मचारियों ने जहाँ वे जाना चाहते थे, वहाँ जाने ही न दिया, बल्कि वे स्वयं आगे चलते चलते उनको ले भी गये।

पाताल दुर्ग

[३]

[कदम्ब राजा के चार दूत दो कैदियों को पकड़कर कुन्तल देश के राजा के पास गये और उससे उन्होंने कहा कि उन्होंने ही मन्त्री के लड़के और उसके दोस्तों को मारा था। फिर जब वे अपने देश वापिस आ रहे थे, तो कुन्तल देश के सैनिकों ने उनमें से दो को गले में फन्दा डालकर मार दिया और कैदियों को छुड़ा दिया। बाद में—]

कदम्ब राजा के दोनों दूत अपने घोड़ों पर नाला पार करके अपने राज्य में पहुँचे। कुन्तल सैनिकों के बाण उनको न लगे। आधी रात का समय था। धुंधली धुंधली-सी चान्दनी और जंगल। इसलिए सैनिक दूतों पर निशाना लगाकर बाण न छोड़ सके।

"नाला पार करके इन दूतों का पीछा करने में खतरा है। कदम्ब राज्य की सीमा के पहरेदार उनकी मदद के लिए आ सकते हैं। कुछ भी हो, उनको ज़िन्दा भी नहीं छोड़ना चाहिए। बताओ, तुम में से कौन शत्रु-प्रदेश में जाकर उनका पीछा कर सकता है? जो उनको मार देगा, मन्त्री उसको ईनाम देंगे।" कुन्तल सैनिकों के सरदार ने कहा।

यह सुनते ही धूमक सामने आया। उसने कहा—"मैं और सोमक यह काम

कर सकते हैं। हमें ईनाम विनाम की कोई जरूरत नहीं है। इन दूतों को ही नहीं, हम कदम्ब राजा के मन्त्री को भी मारकर रहेंगे। जैसे इन दुष्टों ने बताया है, हम कोई पितृ हन्तक या भ्रातृ हन्तक नहीं हैं। हम गाँववाले हैं। हम चूँकि इस उग्रसेन के लगाये हुए ऊँटपटाँग कर बर्दाश्त न कर सके इसलिए हमने बगावत कर दी।"

"हमारे मन्त्री को यही सन्देह हुआ था कि तुम हत्यारे नहीं हो। इसीलिए ही उन्होंने हमें तुमको छोड़ने की आज्ञा दी थी। खैर, बातों में समय व्यर्थ हो रहा है। ये घोड़े और ये तलवारें लेकर, तुम उनका पीछा करना शुरु करो। यदि ईनाम चाहते हो, तो तुम्हें दूतों के सिर हमारे मन्त्री के पास लाने होंगे।" सैनिकों के सरदार ने कहा।

तुरत धूमक सोमक सैनिकों के दिये हुए घोड़े और तलवार लेकर, चले गये।

उन्होंने उसी जगह नाला पार किया, जहाँ दूतों ने पार किया था। वे उनको ढूँढते कदम्ब नगर की ओर निकल पड़े।

वह जगह पहाड़ी थी। बड़े बड़े वृक्ष थे। अन्धकार था। बड़ी भयंकर जगह थी। वे उस तरफ़ न गये, जहाँ जंगली जानवर पानी पीने के लिए आते थे। पगडंडी के रास्ते धीमे धीमे अपने घोड़े चलाते गये। बड़ी होशियारी से धूमक और सोमक जंगल में आगे बढ़ते जाते थे। पर कहीं उनको दूतों का पता न लगा।

"सोम! इस अन्धेरे में उन दुष्टों को पकड़ लेना आसान काम नहीं है। पहले चलो हम अपने गाँव चलें और अपने

परिवारों को सीमा पार करके कुन्तल राज्य पहुँचायें।" धूमक ने कहा।

सोमक ने सिर हिलाते हुए जोश में कहा—"बिना उग्रसेन राजा की मौत देखे, मैं अपने गाँव न जाऊँगा। महज़ इसलिए कि हमने टेक्स नहीं दिया है, वह हमें यूँ मरवाता पिटवाता है और ऊपर से कहता है कि मैं भ्रातृहन्तक हूँ।"

"सोम, तुम अपनी यह जिद छोड़ो। क्या राजा इतनी आसानी से हमारे हाथ में आयेगा? न मालूम उसके कितने अंगरक्षक हों। तुम्हारे साथ मुझ पर भी जोर जबर्दस्ती की गई है। ये भागे हुए दूत जाकर, राजा के सामने हमारी चुगली करेंगे और कहेंगे कि अगर दूत मार दिये गये हैं, तो उसके कारण हम ही हैं। तब ज़रा सोचो, हमारे परिवारों की क्या हालत होगी?" धूमक ने कहा।

यह सुनकर सोमक कुछ नरम पड़ा। उसे लगा कि पहिले परिवार की रक्षा करना अच्छा था। "खैर, जैसा तुम कह रहे हो, वैसा ही करेंगे।" कहकर, सोमक ने घोड़ा एक ओर मोड़ दिया। धूमक भी अपना घोड़ा मोड़ने को था

कि नगर की तरफ़ से रोशनी दिखाई दी। दोनों ने चकित होकर उस ओर अपने सिर मोड़े। किले की दीवारों से जलते बाण जंगल की ओर आने लगे। नगाड़ा, ढोल, ढमाके के शोर से सारा जंगल गूँजने लगा।

"नगर को हमारे लोगों ने घेर लिया है। राजा मर गया है। आओ, हम भी नगर की ओर चलें।" कहते हुए सोमक ने घोड़ा मोड़ा।

धूमक ने उसे रोकते हुए कहा—"जल्दी न करो। कदम्ब नगर को घेर

ठीक आधी रात के समय एक बलवान किले की खाई को पार कर गया और उसने नगर के द्वार खटखटाये।

"कौन है वह? अक्ल नहीं है? सवेरे होने तक फाटक नहीं खोले जायेंगे।" द्वार रक्षक चिल्लाये।

"मैं कौन हूँ? राजाधिराज हूँ।" कहते हुए उस बलशाली ने एक मुक्के से फाटक के टुकड़े टुकड़े कर दिये। कुछ द्वार रक्षक उनके नीचे जा गिरे और बाकी ने जब टूटे हुए फाटक में से काले पर्वत के आकारवाले को देखा, तो भय के कारण वे मूर्छित हो गये।

"तुम यदि मरों का बहाना कर रहे हो, तो करो। कम से कम जो बचेंगे, वे तो जिन्दा रहेंगे। अगर तुमने जाकर किले में हो हल्ला किया, तो गर्दन तोड़कर दूर फेंक दूँगा।" उस बलवान महाकाय ने कहा।

यह सुन कुछ द्वार रक्षकों ने उसकी ओर देखा। उस महाकाय ने खालें पहिन रखी थीं। आँखें अंगारें हो रही थीं। सिर पर दो मुड़े हुए सींग थे और हाथ में काँटोंवाली बड़ी गदा थी।

लेने की शक्ति हम गाँव के गरीब लोगों में कहाँ है? यदि हम अन्धाधुन्ध नगर की ओर भागे, तो फिर राजा द्वारा कैदी बना लिए जायेंगे। पगडंडी छोड़कर, आओ, कहीं पेड़ों के पीछे घूम जायें और मालूम करें कि यह शोर शरावा क्यों हो रहा है, क्यों ये बाण छोड़े जा रहे हैं!" धूमक ने कहा।

कदम्ब नगर में जो शोर शरावा हुआ था, जैसा कि सोमक ने सोचा था, उन गाँववालों का कारनामा न था, जो टैक्स नहीं दे पा रहे थे।

"राक्षस स्वामी! हम नहीं जानते, तुम किस लोक के हो। नगर में चाहो, जिसको तुम खालो पर राजमार्ग के बाँयी ओर लाल लकीरवाले घरवालों का कुछ न बिगाड़ना। उस घर में मेरे स्त्री बच्चे हैं।" एक द्वार रक्षक ने कहा।

राक्षस ज़ोर से हँसा। "अरे मूर्ख, मैं दूसरे किसी लोक से मनुष्यों को खाने के लिए आया हुआ राक्षस नहीं हूँ। मैं यहीं का हूँ। दण्डकारण्य का हूँ। हमारा राजा मानवों से सम्बन्ध करना चाहता है। सुनते हैं कि तुम्हारी राजकुमारी बड़ी सुन्दर है।" कहकर राक्षस चुपचाप महल की ओर चला।

महल के मुख्य द्वार पर दो पहरेदार पहरा दे रहे थे। चार पाँच एक और जगह बैठे गप्पें मार रहे थे। राक्षस उनके सामने के रास्ते के भरे पेड़ों के नीचे अन्धेरे में कुछ देर खड़ा रहा। वह द्वार की ओर गया। फिर यकायक रुका। कुछ दूर और पेड़ों के नीचे चला। महल के प्राकार के पास पहुँचा। उस पर से अन्दर कूदा। जब वह कूद रहा था, तो उसका एक पैर दीवार पर लगा और

धड़ाम से दीवार का कुछ अंश गिर गया। ज़ोर से शब्द हुआ।

तुरत महल में हलचल मच गई। "शत्रु सेना, शत्रु सेना" कुछ चिल्लाने लगे। कुछ और "भूचाल भूचाल" चिल्लाने लगे।

राजमहल के लोग सब भागे भागे आये। ढहे हुए दीवार को देखकर अचरज में पड़ गये।

राजकुमारी कान्तिसेना शोर शरावा सुनकर उठ गई। वह अपने कमरे में से निकल आई। छोटी दीवार पकड़कर नीचे

देखने लगी। उसकी दो सहेलियाँ उसके पास आईं। "कितना शोर हुआ! सब कह रहे हैं कि भूचाल आया था।" आँखें बड़ी करके हाथ हिलाते उसने ढही हुई दीवार दिखाई।

राक्षस चुपचाप सीढ़ियों पर से दुमंजले पर गया जहाँ राजकुमारी थी, रास्ते में उसे कोई नौकर चाकर न मिला। वे सब मशाल लेकर, दीवार के पास गये हुए थे।

वह सीढ़ियों पर से ऊपर जा रहा था कि उसके सिर की छाया राजकुमारी के पास पड़ी। सहेलियाँ डर गईं, उन्होंने यह सोचकर कहीं छाया आकाश में से तो नहीं पड़ रही थी, आकाश की ओर देखा। इतने में राक्षस सीढ़ियों पर से ऊपर आ गया। उसने दबी आवाज़ में कहा—"मैं तुम्हारे में से किसी का नुक्सान नहीं करूँगा। फिर भी अगर कोई मूर्छित होना चाहे, तो हो जाये। पर अगर तुमने चूँचाँ की तो गला घोंट दूँगा।"

राजकुमारी डर गई और बेहोश हो गई। सहेलियों ने उसे नीचे न गिरने दिया। सम्भाल लिया। राक्षस उनके पास आया। कान्तिसेना को धीमे से पकड़ा। उसे उठाकर कन्धे पर डाल लिया। उसने उसकी सहेलियों से कहा—"तुम राजकुमारी से सौन्दर्य में किसी भी तरह कम न हो? क्या मेरे साथ आओगी? शूर, साहसी हमारे युवकों से शादी कर लेना। उनके सौन्दर्य के बारे में जानने पूछने की कोई जरूरत ही नहीं। मुझे तो देख ही लिया है न? मेरे जितने सुन्दर ही हैं वे लोग।"

सहेलियाँ यह सुनते ही, सब एक साथ बेहोश हो गईं। कान्तिसेना को लेकर,

राक्षस सीढ़ियों पर से उतर आया। अभी वह सोच रहा था कि परकोटे को कहाँ पार किया जाये, राजा का एक नौकर उस तरफ़ आया। उसे देखकर वह जोर से चिल्लाया—"राक्षस, राजकुमारी को उठाकर ले जा रहा है।"

राक्षस जल्दी बाग की ओर भागा और वहाँ पेड़ों के नीचे खड़ा हो गया। वह राज सेवकों में से किसी को नहीं मारना चाहता था। वह केवल राजकुमारी को सुरक्षित उठा ले जाना चाहता था। इसलिए वह मशालें, तलवार लिए हुए आते हुए लोगों की ओर न गया। वह झट परकोटा पार कर गया और नगर के द्वार की ओर भागने लगा।

तब तक राजा उग्रसेन और मन्त्री उठकर महल की छत पर आ गये थे। उग्रसेन को भागते राक्षस के कन्धे पर अपनी लड़की दिखाई दी। कुछ सैनिकों ने राक्षस का निशाना बनाकर बाण छोड़े। उनमें से एक दो उसको लगे भी, पर उसने उसकी परवाह न की। वह नगर के द्वार से निकलकर जंगल की ओर चल दिया।

"किले के बुर्जों से अग्नि बाणों का उपयोग करके मालूम करो कि वह जंगल में किस ओर जा रहा है। इस बीच घुड़ सवार उसका पीछा करें। राक्षस को मारने के लिए मैं स्वयं आ रहा हूँ।" उग्रसेन जोर से चिल्लाया, तुरत सैनिक बाणों पर मशालें लपेटकर उस ओर छोड़ने लगे जिस ओर राक्षस गया था। घुड़ सवार नगर के द्वार पार करके जंगल में राक्षस का पीछा करने लगे। (अभी है)

व्यर्थ शक्तियाँ

विक्रमार्क ने अपना हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारकर, हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, तुम्हारी सहन शक्ति अद्वितीय है। यदि तुम महान सिद्धि या शक्ति पाने के लिए यूँ कष्ट उठा रहे हो, तो उन ब्राह्मण लड़को की कहानी सुनाता हूँ, जो अपूर्व शक्तियाँ पाकर भी नष्ट हो गये थे।" उसने इस प्रकार कहानी सुनांनी शुरु की।

कुसुमपुर नामक राज्य में ब्रह्मस्थल नाम की एक ब्राह्मणों की बस्ती थी। उस गाँव में विष्णुस्वामी नाम का एक ब्राह्मण रहा करता था। उसके चार बच्चे थे। उनका बचपन गुजर रहा था और वे वेदाध्ययन

बेताल कथाएँ

कर रहे थे कि विष्णुस्वामी और उसकी पत्नी गुज़र गये। भाई बेसहारे हो गये। वे अपने मामा के पास जाकर रहनें लगे। वह यज्ञस्थल नाम की ब्राह्मणों की बस्ती में रहा करता था। पर किस्मत का कुछ ऐसा फेर कि उसका मामा भी गरीब हो गया। भाइयों के पास न खाने को था, न पहिनने को ही। सब उनको नीचा देखने लगे।

जब वे इस बुरी हालत में थे, तो एक दिन बड़ा भाई श्मशान की ओर गया। वहाँ उसने एक शव को देखकर कहा--"यह, जिसके कि प्राण चले गये हैं, हमसे अधिक किस्मतवाला है।" यह सोच कर, वह एक रस्सी लाया और एक टहनी से लटकाकर उसमें फन्दा डाल उसने उसे गले में डाल लिया। वह बेहोश हो गया, पर मरा नहीं क्योंकि रस्सी टूटकर ज़मीन पर गिर गयी थी।

जब उसे होश आया, तो कोई भलामानस उसके पास बैठकर अपना अंगोछा झलकर हवा कर रहा था। "बेटा, तुम पढ़े लिखे मालूम होते हो, पापों के कारण कष्ट आते हैं। उनको हटाने के लिए पुण्य करने

चाहिए, भला क्या वे आत्महत्या से खतम हो जाते हैं?" कहकर, वह चला गया।

बड़ा भाई अपने छोटे भाइयों के पास गया और जो कुछ गुज़रा था, उसने उनको बता दिया। "मैं जाकर तपस्या करूँगा, ताकि अगले जन्म में कम से कम मुझे गरीबी न झेलनी पड़े।"

इस पर भाइयों ने कहा—"पैसे के न होने कारण, दुःख और विघ्न आते हैं। धन चंचल है। इसलिए सोना बनाने की शक्ति जैसे तैसे हमें प्राप्त करनी चाहिए।" हम उस विद्या को सीखें, जिससे यह शक्ति मिले। चारों, चारों दिशाओं में, यह निश्चय करके निकल पड़े कि कुछ समय बाद, फिर वहीं मिलेंगे।

कुछ समय बीता। वे निश्चित स्थल पर मिले। उन्होंने एक दूसरे से पूछा—"तुमने क्या विद्या सीखी है? क्या शक्ति पाई है?"

"यदि किसी प्राणी की हड्डी मिल जाये, तो मैंने ऐसी विद्या सीखी है कि उस पर माँस लगा सकता हूँ।" एक ने कहा।

"उसके चर्म पर मैं रोम आदि बना सकता हूँ।" दूसरे ने कहा।

"बाकी सारा शरीर मैं बना सकता हूँ।" तीसरे ने कहा।

"तुम तीनों मिलकर जो शरीर बनाओगे, मैं उसमें प्राण फूँक सकता हूँ।" चौथे ने कहा।

अपनी अपनी विद्याओं को दिखाने के लिए, वे हड्डी खोजते खोजते एक जंगल में गये। वहाँ उन्हें एक हड्डी मिली। वह एक शेर की हड्डी थी। भाइयों में से एक ने उस पर माँस वगैरह, लगाया। दूसरे ने उस पर चर्म और रोम लगाये। तीसरे ने शेर का शरीर पूरा कर दिया। चौथे ने उसमें प्राण डाला। तुरत वह शेर उन चारों पर लपका, उनको मारकर, खाकर आराम से चला गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"उन चारों में कौन था, जिसके कारण वे शेर के शिकार हुए? यह पाप किसको लगेगा? इन प्रश्नों का तुमने जान बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"पाप उसने किया था, जिसने शेर में प्राण डाले थे। कहा जा सकता है कि उसने शेर की सृष्टि न की थी। पर तीनों यह न जानते थे कि उन्होंने किस प्राणी की सृष्टि की थी। उन्होंने अपनी विद्याओं का ही प्रदर्शन किया था। परन्तु चौथे ने यह जानते हुए भी कि वह एक शेर को प्राण दे रहा था, उसको प्राण दिये। साफ है उसके पाप के कारण ही सब मर गये।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और शव के साथ पेड़ पर जा बैठा।

मन की बात

एक गांव में जब एक स्त्री के तीन लड़के हो गये, तो उसका पति गुज़र गया। कुछ दिन बाद, जब वह मरने को थीं, तो उसने अपने बड़े दो लड़कों को पास बुलाकर कहा—"तुम्हारा भाई चिदम्बर, छोटा है। तुम यह शपथ करो कि उसको किसी प्रकार का कष्ट दिये बिना बड़ा करोगे। नहीं तो मेरी आत्मा को शान्ति न मिलेगी।" उन्होंने उसकी इच्छा मान ली। इसके बाद उनकी मां ने आंखें मूँद लीं।

चिदम्बर के दोनों भाई, खेती करते और बड़े लाड़ प्यार से अपने भाई का भरण पोषण करते। चूँकि वह बिना किसी कष्ट के राजकुमार की तरह बड़ा हुआ था, इसलिए उसे भाइयों का मिट्टी कीचड़ में काम करना बिल्कुल पसन्द न था। वह अच्छे कपड़े पहिनकर बागों में, नदी के किनारे, टहलता, चाहता कि वह पालकी में सवारी करे, हाथी पर सवारी करे।

भाइयों ने, चिदम्बर की आवारागिर्दी को बुरा न समझा। वे अपना वचन निभा रहे थे। बस। चिदम्बर रोज तीन बार, पेटभर खाना खाता। वह खूब बलवान हो गया और सुन्दर भी, जैसे कोई राजकुमार हो।

कालक्रम से दोनों भाइयों ने विवाह कर लिया और वे अपने घर अपनी पत्नियाँ भी ले आये। चिदम्बर बिना कोई काम धाम किये बस खाने के लिए आ जाता था, उसकी भाभियों को यह गँवारा न था। उन्होंने अपने पतियों से कहा कि वैसा नहीं होना चाहिए था।

"हमने अपनी माँ को वचन दिया है कि हम उसे बिना कोई कष्ट दिये बड़ा करेंगे।" पतियों ने कहा।

"यही तो वचन दिया था कि खिला पिलाकर बड़ा करोगे, पर यह वचन तो नहीं दिया था कि आजीवन उसका पोषण करोगे? अब तुम्हारा भाई बड़ा हो गया है। उसे अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए। तुम उसे कब तक पालोगे?" चिदम्बर की भाभियों ने अपने पतियों से कहा।

पत्नियों की बात चिदम्बर के भाइयों को जंची। उन दोनों ने अपने अपने अलग घर बना लिये। और चिदम्बर को पुराना घर, और घर की चीज़ें, उसके हिस्से की सम्पत्ति के रूप में दे दिये।

चिदम्बर अकेला हो गया और उसे अपना जीवन निर्वाह स्वयं करना पड़ा। उसे रसोई करनी भी न आती थी। एक दिन वह भूखा ही पड़ा रहा। बिना कुछ खाये ही वह सो गया।

उसे एक स्त्री स्वप्न में दिखाई दी। उसने कहा—"मैं तुम्हारी माँ हूँ। तुमने जिन्दगी में बड़ी बड़ी ख्वाहिशें पाल ली हैं। बिना भगवान की कृपा के वे पूरी नहीं होंगी। मैं तुम्हें दूसरों के मन को परखने की शक्ति देता हूँ। उस शक्ति को पाकर सुख से रहो। कहते हैं जो गाँव में जिन्दगी बसर नहीं कर सकते, वे शहरों में करते हैं। तुम नगर जाकर, राजा का आश्रय लो।"

चिदम्बर जब उठा—"जो गाँवों में जिन्दगी बसर नहीं कर सकते, वे शहर चले जाते हैं...." यही बात उसके कानों में गूँज रही थी। वह सवेरा होते ही शहर की ओर निकल पड़ा। राजमहल गया और वहाँ के अधिकारी से उसने काम

माँगा। चिदम्बर को हट्टा खट्टा पा वह सन्तुष्ट हुआ और उसने द्वार पर पहरा देने के लिए उसे नियुक्त किया।

एक दिन राजा के दरबार में कहीं बाहर का कोई सामन्त आया। जब वह उसके पास से गुज़र रहा था, चिदम्बर ने उसको ध्यान से देखा और तुरत अपने अधिकारी के पास भागा भागा गया। उसने उससे कहा—"हुज़ूर, जो अभी अभी अन्दर गया है, वह बड़ा दुष्ट है। वह हमारे राजा की हत्या करने आया है। उसके पास ज़हर में बुझी छुरी है।"

उस कर्मचारी ने चिदम्बर की बात पहिले तो नहीं सुनी, पर जब उसने वह बात बार बार कही, तो वह उसको मन्त्री के पास ले गया। मन्त्री ने सब सुनकर कहा—"क्या तुम जानते हो, तुम क्या कह रहे हो? यह जो आये हैं वे राजा के मित्र हैं, उन्होंने पिछले युद्ध में उनकी सहायता की थी। तुमने चूँकि झूट बोला है, इसलिए तुम्हारा सिर कटवा देना चाहिए।"

"पहिले उस दुष्ट की तलाशी लीजिये, यदि मेरी बात झूट निकले, तो मुझे सजा दीजिये।" चिदम्बर ने कहा।

मन्त्री जब राजा के पास गया, तो आया हुआ सामन्त राजा से कह रहा था—"मैं अकेले में आपसे कुछ बात करना चाहता हूँ।" राजा ने उसको अपने निजी कमरे में भेजा और नौकरों से कहा कि जब तक मैं न बुलाऊँ, तब तक किसी को न आने देना। राजा जब अन्दर जा रहा था, तो मन्त्री ने उसको चिदम्बर की बताई हुई बात बताई। राजा चकित रह गया और उसने मन्त्री से किसी बहाने उसकी तलाशी लेने के लिए कहा।

मन्त्री कुछ सैनिकों के साथ उस कमरे में गया। "माफ़ कीजिये। हमें नियमानुसार आपकी तलाशी लेनी होगी।" मन्त्री ने उससे कहा। यह सुनते ही सामन्त का मुँह फीका पड़ गया। सैनिकों ने जब उसकी तलाशी ली, तो उसके पास जहर में बुझी छुरी बरामद हुई। उस पर शत्रु राजा की मुद्रा थी।

सामन्त को मौत की सज़ा दी गई और राजा ने चिदम्बर को अपना अंगरक्षक नियुक्त किया। चिदम्बर राजमहल में, हमेशा राजा के साथ ही रहा करता। राजा की पत्नी गुजर चुकी थी। उसके एक लड़की और दो लड़के थे। दास दासियाँ ही उनकी देखा भाल करते।

एक दिन एक दासी जब राजा के लिए भोजन ला रही थी, तो चिदम्बर ने उसको ध्यान से देखा। उसके जाने के बाद उसने राजा के कान में कहा—"महाराज, आप इस खाने को मत छूइये। इसमें विष है। यह दासी शत्रु राजा से वेतन पाती है। वह एक चिट लिखकर अपनी खिड़की से फेंककर यह बात बतायेगी कि आपको विष दिया गया है।"

राजा ने यह जानने के लिए कि चिदम्बर की बात सच थी कि नहीं, अपना खाना एक बिल्ली को खिलाया। बिल्ली उसे खाकर मर गई।

उस दिन रात को दासी की खिड़की के पास कोई आया। उसने उसको एक चिट दी। तुरत सिपाहियों ने जो वहाँ छुपे हुए थे, उसे पकड़ लिया और वह चिट ले ली। उस चिट में साफ़ साफ़ लिखा था कि राजा को उसने विषवाला भोजन दिया था।

चिदम्बर की इस शक्ति पर राजा को आश्चर्य हुआ। चिदम्बर ने राजा से कहा कि उसकी स्वर्गीय माँ ने दूसरों की मन की बात जानने की शक्ति उसे दी थी।

"....तो बताओ मेरे कर्मचारियों में कौन विश्वास-पात्र नहीं है।" राजा ने कहा।

चिदम्बर ने सबको देखा। उसने कहा कि वे विश्वासपात्र ही थे। राजा ने सोचा कि उस जैसी शक्तिवाले को अपने पास रहना बड़ा लाभप्रद था।

एक दिन राजा ने चिदम्बर से कहा—"हम तुम्हारी मदद चाहते हैं। मेरी लड़की सयानी हो गई है। जब कभी हम किसी राजकुमार की बात उठाते हैं,

तो कहती है कि शादी ही नहीं करेगी। उसके मन में क्या है, मालूम करो।"

राजकुमारी को बुलाया गया। चिदम्बर ने उसको ध्यान से देखकर कहा—"महाराज, ये किसी को चाह रही हैं। अगर ये उनसे विवाह करना चाहेंगी, तो इनको भय है कि आप आपत्ति करेंगे। इसलिए ये विवाह के लिए न कर रही हैं।"

"क्या यह बता सकते हो कि वह किसे चाह रही है?" राजा ने पूछा।

"वह मुझे ही चाह रही है।" चिदम्बर ने कहा। राजा ने चकित होकर, लड़की की ओर देखा—"क्या यह सच है?" राजकुमारी ने कोई जवाब न दिया। सिर झुकाकर वह वहाँ से चली गई।

राजा चिदम्बर की ओर देखता कुछ सोचने लगा। यह देख चिदम्बर मुस्कराया। "क्या तुम जानते हो मैं क्या सोच रहा हूँ?" राजा ने पूछा।

"क्यों नहीं जानता महाराज! इस गरीब को कैसे अपनी लड़की दूँ। पर इसमें इस बिचारे की क्या गलती है, जब मेरी लड़की ने ही इसे प्रेम किया है? निरपराधी को मरवा देना शायद पाप है।" चिदम्बर ने कहा।

राजा ने कुछ न कहा। उसने घोषणा करवा दी कि वह अपनी लड़की का विवाह चिदम्बर के साथ कर रहा था। जल्दी ही उन दोनों का विवाह वैभव के साथ हो गया। चिदम्बर की शेखचिल्ली ख्वाईशें पूरी हो गईं और वह पालकी पर सवार हुआ। हाथी पर सवार करके उसका जलूस निकाला गया।
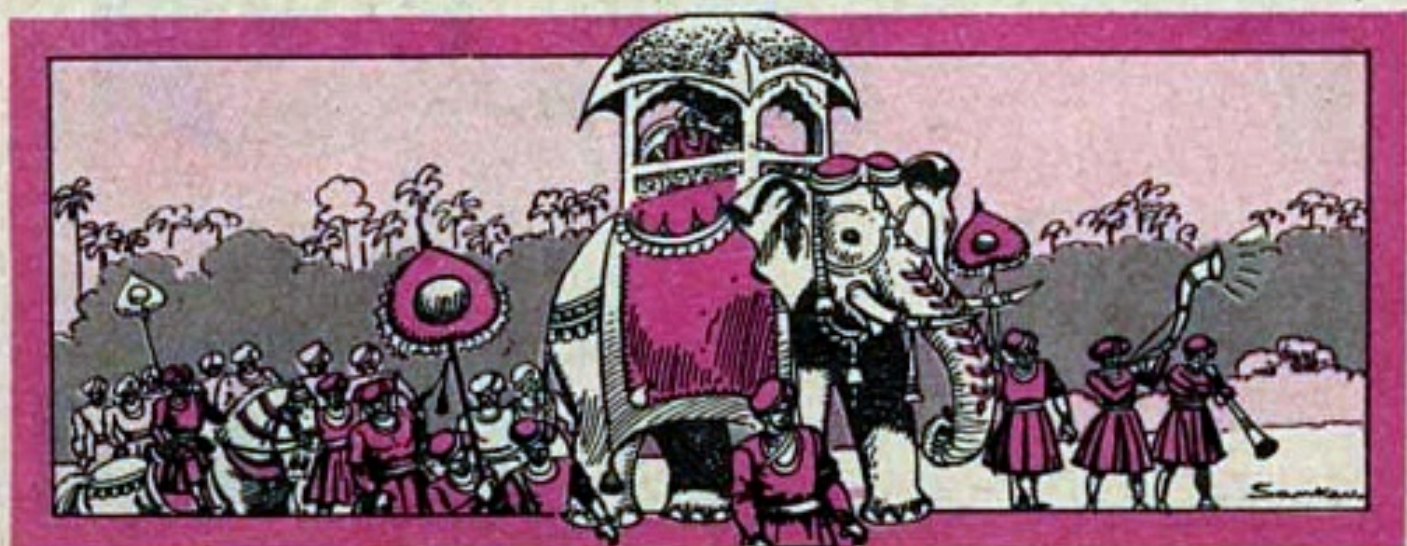
कर्मचारी का प्यार

पन्नालाल के प्रान्त के राजप्रतिनिधि शम्भु नायक के लड़के का जन्म दिन आया। ग्रामाधिकारी व अन्य प्रमुखों को निमन्त्रण मिला। पन्नालाल का ग्रामाधिकारी बीमारी के कारण वहाँ न जा सका। उसने पन्नालाल के द्वारा सौ रुपये का एक सोने का हार, गाँववालों की ओर से प्रशंसापत्र और आशीश भिजवाये।

पन्नालाल सवेरे ही निकल पड़ा। बारह मील चलकर नगर के पास पहुँचा। उसने अपने धूल से सने कपड़े उतार दिये और थैले में से नये कपड़े निकालकर पहिन लिए। राजप्रतिनिधि का घर एक मील दूर था। नये कपड़े पहिने, खूब सजधजकर जाते हुए लोग पन्नालाल को दिखाई दिये। चीथड़े कपड़े पहिने एक गरीब चार लड़कों को साथ लेकर आते जाते लोगों से कुछ माँग रहा था, कोई उसकी न सुन रहा था। हर कोई आगे बढ़ा जा रहा था। पन्नालाल के पास आते ही, उस गरीब ने कहा—"बाबू, अगर कोई धोती हो, तो मेहरबानी करके दीजिये। प्रभु के यहाँ खाने पर जाना चाहता हूँ। इन फटे कपड़ों में जाने न देंगे।"

"मैं बाहर से आ रहा हूँ। मेरे पास और कपड़े नहीं हैं। ये ही हैं।" पन्नालाल ने अपने थैले के कपड़े दिखाये।

"तो वे ही दीजिये।" गरीब ने उनको सन्तोषपूर्वक स्वीकार किया। फिर उसने बच्चों से कहा—"चलो माँ को भी ले चलें" बच्चों को लेकर वह अपनी झोंपड़ी की ओर गया।

पन्नालाल को कुछ दूर जाने के बाद एक दृश्य दिखाई दिया। एक घोड़ा गाड़ी सड़क से कुछ दूर हटकर खेत के कीचड़ में गड़-सी गई थी। उस गाड़ी में एक भलामानस बैठा हुआ था। उसके साथ अच्छे कपड़ों का गट्ठर और चान्दी का सामान था।

गाड़ीवाला नीचे उतरा और घोड़े को पकड़कर उससे कीचड़ में से गाड़ी निकलवाने लगा। गाड़ी में बैठे हुए आदमी ने कहा—"अरे, किसी को बुलाओ न।"

गाड़ीवाला सड़क पर आकर लोगों से कहने लगा—"ज़रा गाड़ी को निकालने में मदद तो दीजिये।"

गाड़ी को धकेलने के लिए कीचड़ में उतरना जरूरी था। सब सजधजकर राजप्रतिनिधि के घर जा रहे थे। इसलिए किसी ने कीचड़ में उतरकर गाड़ी धकेलना न चाहा।

इतने में पन्नालाल वहाँ आया। गाड़ीवाले ने पन्नालाल से कहा—ज़रा एक हाथ तो लगाइये। गाड़ी ज़रा सड़क पर लगवा दीजिये। सामने से साँड़ को आता देख, घोड़ा बिदक गया और गाड़ी को खेत में खींच ले गया। कीचड़ धोने के लिए पास में नहर भी है।"

"अरे, क्या यूँ ही धकेलेंगे? कहो कि दुवन्नी या चवन्नी मिलेगी।" गाड़ी में बैठे आदमी ने कहा।

पन्नालाल ने तुरत अपने हाथ की थैली नीचे रखी। कपड़े ऊपर किये। खेत में उतरकर गाड़ी धकेलने लगा। गाड़ी हिली नहीं। तब पन्नालाल ने एक पहिया कीचड़ में से निकालकर धकेला। जब गाड़ीवाला आगे से घोड़ा खींचने लगा, तो गाड़ी हिली

और मुँडेर पर जा लगी। फिर घोड़ा उसको आसानी से खींचने लगा। पन्नालाल जब अपनी थैली लेने के लिए पीछे मुड़ा, तो गाड़ी में बैठे आदमी ने कहा—"ये लो।" और उसने पन्नालाल की ओर दुवन्नी फेंकी और गाड़ी में तेज़ी से चला गया। उसने पन्नालाल का मुँह तक न देखा।

पन्नालाल वह दुवन्नी लेकर एक और हाथ मे अपना थैला लेकर नहर तक पैदल गया। पहिये को उठाने की वजह से उसके कपड़ों पर दाग वगैरह लग गये थे। जब उसने उनको धोने की कोशिश की, तो वे और फैल गये और क्या करता? पन्नालाल नहर में हाथ पैर धोकर चला आया।

जब पन्नालाल सड़क पर आया, तो उसको एक छोटी-सी पेटी दिखाई दी। वह जेवरों की पेटी थी। पन्नालाल ने जब उसे खोला, तो उसमें एक हीरे की अंगूठी थी। वह शायद गाड़ी में से नीचे गिर गई थी। यदि उसे गाड़ी में बैठे हुए आदमी को देना था, तो पन्नालाल ने उसे ठीक तरह देखा न था। सिर्फ गाड़ीवाले को ही ठीक तरह देखा था। पन्नालाल केवल यही जानता था कि जो आदमी गाड़ी में बैठा था, उसकी बड़ी बड़ी मूँछें थीं और उसने पगड़ी पहिन रखी थी। यह सोचकर कि अगर वह आदमी मिला या कोई और जिसकी अंगूठी खो गई हो, तो उसे दे देगा। पन्नालाल ने उस पेटी को अपनी थैली में डाल लिया।

शम्भुनायक के मकान के दरबान ने पन्नालाल के कपड़े के दागों को देखकर पन्नालाल को रोका। वहाँ एक कर्मचारी ने पन्नालाल के पास आकर कहा—"भाई, कौन हो तुम? जाओ, उस तरफ़ भोजनशाला की ओर जाओ।"

पन्नालाल ने कहा कि वह फलाने ग्रामाधिकारी की ओर से आया था। चूँकि वह स्वयं अस्वस्थ था।

"अगर ग्रामाधिकारी बीमार है, तो क्या तुम जैसों को भेजा जाता है? क्या इस पोषाक में राजप्रतिनिधि को देखने की सोच रहे हो? जाओ जाओ।" वह कर्मचारी और अतिथियों की आवभगत करने में लग गया।

"खैर, इन उपहारों को ही अन्दर पहुँचाओ।" कहते हुए पन्नालाल ने अपने हाथ की थैली ऊपर उठाई।

"अरे, गजब कर दिया। जाओ भाई। अगर हुज़ूर को मालूम हो गया कि आदमी नहीं आया है और उसने उपहार भेजे हैं, तो वे बड़े नाखुश होंगे। जहाँ से लाये हो, वहीं इन्हें ले जाओ।" कर्मचारी ने कहा। पन्नालाल जाकर वराण्डे में जा बैठा। उसे बड़ा बुरा लगा कि जिस काम पर वह आया था, वह बिगड़ गया था। दुकान में जाकर वह नये कपड़े भी नहीं खरीद सकता था, क्योंकि उसका समय भी चला गया था। पन्नालाल सोच ही रहा था कि क्या किया जाय कि एक बड़ा आदमी जिसने पगड़ी बाँध रखी थी, कुछ सोचता सोचता उस तरफ़ आया।

जो गाड़ी खेत के कीचड़ में फँस गई थी, उसमें यही आदमी बैठा था। यह ही राजप्रतिनिधि का प्रधान मन्त्री है। जब वह अतिथियों को देने के लिए उपहार और लड़के लिए एक अंगूठी लेकर, एक गाड़ी में आ रहा था, तो वह गाड़ी कीचड़ में फँस गई थी। जब गाड़ी मुँडेर पर से सड़क पर आयी, तो एक चान्दी की कटोरी उलट पड़ी और उसमें रखी हीरे की अंगूठी सड़क के किनारे गिर

गई। घर आने पर बहुत खोजा, पर वह पेटी न मिली।

जब यह पता लगा कि अंगूठी खो गई थी, तो शम्भुनायक ने अपने मन्त्री को बुरी तरह लताड़ा। हज़ार रुपये की अंगूठी थी। बिना उसको लाये मुँह न दिखाना, जाओ. राजप्रतिनिधि ने उसे डाँटा। यूँ अपमानित होकर ज्योंहि प्रधान मन्त्री बाहर आया तो उसने पन्नालाल को देखा। उसे लगा कि इस जैसे आदमी के लिए ही उसने दुवन्नी फेंकी थी। उसने पूछा—"भाई तुमने गाड़ी को खेत में से धकेला था?"

"जी हाँ, मैंने ही। क्या आप मुझे देखकर पहिचान गये?" पन्नालाल ने कहा।

"क्या तुम्हें कहीं अंगूठी की पेटी दिखाई दी?" प्रधान मन्त्री ने पूछा।

"क्या वह आपकी ही है? पर मैंने तो आपको नहीं देखा है? मैं कैसे विश्वास करूँ कि वह आपकी ही है?" पन्नालाल ने पूछा।

"बस करो....इधर उधर के प्रश्न न करो। वह इधर दे दो।" मन्त्री ने इस भरोसे कहा कि खोई हुई अंगूठी इतनी आसानी से मिल गई थी।

"जल्दी न कीजिये। हो सकता है आपने किसी पेड़ के पीछे से मेरा पेटी का उठाना देखा हो? मुझे कैसे मालूम हो? उस गाड़ीवाले से गवाही दिलवाइये कि आप ही उस गाड़ी में आये थे?" पास आये हुए मन्त्री को हटाते हुए पन्नालाल ने कहा।

मन्त्री बड़ा अपमानित हुआ। मुझ जैसे को यह झूठा बताता है और एक गाड़ीवाले की गवाही चाहता है। अगर कोई सुन ले, तो मेरी कितनी तौहीन हो। यह सोच मन्त्री ने पन्नालाल पर हाथ

उठाने की सोची। पन्नालाल बलवान तो था ही, उसने उसको दूर ही दूर रखा।

चार पाँच लोग जमा हो गये। वे भी पन्नालाल की तरफ़ बात करने लगे। "जो वह कह रहा है, वह ठीक ही तो कह रहा है। वह कह रहा है कि वह आपको नहीं पहिचानता, उस हालत में गाड़ीवाले को बुलाने में आपको क्या एतराज है?"

मन्त्री ने एक को भेजकर गाड़ीवाले को गाड़ी के साथ बुलवाया। जब गाड़ीवाले ने कहा कि गाड़ी में वह ही था, तो पन्नालाल ने मन्त्री से अंगूठी के बारे में और भी पूछताछ की। उसके बाद अंगूठी की पेटी मन्त्री को दे दी।

इतने में शम्भुनायक यह जानकर बाहर आया कि अंगूठी मिल गई थी और उसके बारे में कुछ झगड़ा हो रहा था। उसके पूछने पर पन्नालाल ने सारी बात कह दी। उसे यह जानकर बड़ा खेद हुआ, क्योंकि उसके कपड़ों पर दाग थे इसलिए उसे अन्दर नहीं आने दिया गया था। फिर उसने बड़े प्यार से कहा—"तुम्हारे बारे में मैंने पहिले ही सुन रखा है। हम इस प्रकार यहाँ मिल सके, यह मेरे लिए बड़ी खुशी की बात है।" कहकर वह उसको अन्दर ले गया। उसका खूब सत्कार और सम्मान किया। उसके लाये हुए उपहार लिये। उसे और उसके ग्रामाधिकारी को उपहार दिये। उस आदमी को, जो उसके मालिक से इतना सत्कार पा रहा था, दुवन्नी देने के कारण मन्त्री बड़ा शर्मिन्दा हुआ।

लोहजंघ की कथा

किसी जमाने में मथुरा नगर में मकरदन्ष्ट्र नाम की वृद्ध देवदासी की रूपणिका नाम की एक लड़की हुआ करती थी। वह बड़ी सुन्दर थी। एक बार जब वह मन्दिर में पूजा के समय गई, तो उसने एक सुन्दर युवक को देखा और उस पर मुग्ध हो गई। इसलिए उसने उसके घर अपनी दासी भेजकर उसको बुलवाया।

वह ताड़ गया कि उसे क्यों बुलाया जा रहा था। उसने रूपणिका की दासी से कहा—"मैं लोहजंघ नाम का ब्राह्मण हूँ। मेरे पास कानी कौड़ी नहीं है। रूपणिका के घर पैर रखने का मुझे अधिकार नहीं है।"

"हमारी मालकिन को तुम्हारा पैसा नहीं चाहिए।" दासी ने कहा। अगर यही बात थी, तो लोहजंघ वहाँ जाने के लिए मान गया। यह सुन रूपणिका बड़ी खुश हुई। घर जाकर उसके आने की प्रतीक्षा करने लगी। कुछ देर बाद जब लोहजंघ आया, तो मकरदन्ष्ट्र ने सोचा—"यह कहाँ से आ पड़ा है!" पर रूपणिका ने सोचा कि उसके आने से उसका जन्म सफल हो गया था। उसने उसको अपने घर में रख लिया और स्वार्गिक सुख अनुभव करने लगी।

यह देख रूपणिका की माँ ने कहा—"क्यों, इस गरीब को घर में रखे हुए हो! हम लोगों को पैसे को प्यार करना चाहिए, न कि आदमी को, कितनी बार मैंने तुमको यह बात बताई है!"

"माँ, यह आदमी मुझे प्राणों से भी अधिक प्यारा है! मुझे पैसे की क्या कमी

है ? इस तरह के उपदेश कभी न देना।" रूपणिका ने कहा।

लड़की की यह बात सुनकर मकरदन्ष्ट्र को बड़ा गुस्सा आया। पर लड़की का तो कुछ न कर सकी, किन्तु सोचने लगी कि लोहजंघ को कैसे घर से निकाला जाये? एक दिन जब रूपणिका मन्दिर गई हुई थी और लोहजंघ भी घर में न था, तो उसे एक क्षत्रिय, कुछ सैनिकों को साथ लेकर आता दिखाई दिया। उसने उस क्षत्रिय को अन्दर बुलाया और कहा—"एक गरीब हमारे घर आया हुआ है और जाने का नाम नहीं लेता है। यदि तुमने उसे चलता कर दिया, तो मेरी लड़की तुम्हारे साथ ही रहेगी।"

क्षत्रिय इसके लिए मान गया कुछ देर में लोहजंघ वापिस आया। तुरत क्षत्रिय के सैनिकों ने उसे मारा पीटा और एक नौबचे में धकेल दिया। कुछ देर बाद रूपणिका आई, जो कुछ हुआ था, उसे जानकर वह बड़ी रोई धोई। वह देख, क्षत्रिय अपने रास्ते चला गया।

लोहजंघ का अपमान तो हुआ ही था, साथ प्रेमिका का वियोग भी सहना पड़ रहा था। यद्यपि वह मकरदन्ष्ट्र से बदला लेना चाहता था तो भी जीवन से उसे विरक्ति हो गई। प्राण छोड़ देने के उद्देश्य से वह तीर्थ यात्रा पर निकल गया।

वह एक मरूस्थल में से जा रहा था कि धूप बड़ी तेज़ हो गई। कहीं पेड़ों की छाया न थी। जब वह प्यास और गरमी से जला-सा जा रहा था, तो उसे एक जगह हाथी की लाश दिखाई दी। गीदड़ों ने उसमें छेद कर दिया था और अन्दर का माँस खा लिया था। लोहजंघ उस लाश की खोल में घुस गया।

चूँकि वहाँ गरमी न थी, वह आराम से सो गया।

जब वह उठा, तो मूसलाधार वर्षा हो रही थी। हाथी के शरीर में जो छेद का रास्ता था, वह भी भर गया। वह शव वर्षा के पानी में तैरने लगा और तैरता तैरता गंगा नदी में जा मिला और गंगा प्रवाह के साथ वह समुद्र में पहुँचा। समुद्र में तैरते शव को देखकर, एक बड़ा गरुड़ आया और उसे उठा ले गया और ले जाकर, उसे समुद्र के परे लंकाद्वीप में डाल दिया। जब पक्षी ने शव को चोंच से खरोंचा, तो एक द्वार-सा बन गया और लोहजंघ बाहर आया। मनुष्य को देखते ही, पक्षी भाग गया। बाहर निकलकर, उसने जब इधर उधर देखा, तो लोहजंघ को लगा कि वह सपना देख रहा था।

वहाँ उसे दो राक्षस दिखाई दिये। उन्हें देखकर लोहजंघ डरा। वे भी उसे देखकर डरे। वे न भूले थे कि राम जब समुद्र पार करके गये थे, तो उनकी क्या गति हुई थी। उन्होंने आपस में कुछ बात बात की। फिर उनमें से एक विभीषण के

पास गया और उससे कहा कि कोई आदमी समुद्र पार करके आया था। विभीषण भी यह सुनकर डरा, उसने लोहजंघ को अपने घर बुलाया। लोहजंघ दोनों राक्षसों को लेकर लंका नगर में पहुँचा। वहाँ उसने विभीषण को देखा और उसे आशीर्वाद दिया।

विभीषण ने उसका आतिथ्य किया। फिर पूछा—"आप इस द्वीप में कैसे आ सके?"

तब लोहजंघ ने यह कहानी गढ़कर सुनाई।

"मैं मधुरा नगर का रहनेवाला लोहजंघ हूँ। गरीबी न सह सका। मैंने नारायण के मन्दिर में जाकर बिना खाये पीये तपस्या की। तब भगवान मुझे स्वप्न में दिखाई दिये। "तुम विभीषण के पास जाओ। वह मेरा भक्त है। वह तुम्हें धन देगा।" तब मैंने कहा—"कहाँ मै और कहाँ विभीषण? कैसे जाया जाये?" "आज ही तुम विभीषण से मिलोगे।" कहकर भगवान अदृश्य हो गये। जब सवेरा हुआ, तो मैं समुद्र के इस पार था। मैं नहीं जानता कि क्या हुआ।"

विभीषण ने भी सोचा कि जिस द्वीप में कोई आदमी नहीं आ सकता था, अगर कोई आ सका, तो वह भगवान की महिमा ही थी। उसने अपने राक्षसों को भेजकर स्वर्णमाला पर्वत के एक गरुड़ पक्षी को मंगवाया। "तुम मधुरा नगर के नारायण को यह अलंकार दो।" कहकर उसने लोहजंघ को शंख, चक्र आदि आभूषण दिये। उसे भी बहुत-से रत्न आदि दिये।

लोहजंघ विभीषण का अतिथि बनकर कुछ समय लंका में रहा। वहाँ के आश्चर्य उसने देखे। विभीषण के दिये हुए आभूषण लेकर और उस गरुड़ पक्षी पर, जो लाख योजन बिना रुके उड सकता था, सवार होकर मधुरा वापिस आया। वह नगर के बाहर एक निर्जन विहार के पास उतरा। पक्षी को एक तरफ़ बाँध दिया। रत्न कहीं रख दिये। नगर जाकर एक रत्न बेचकर अपने लिए खाना खरीदा। कुछ उसने खाया, कुछ पक्षी को खिलाया। शाम होने के बाद, अच्छे कपड़े पहिनकर, रत्नों से अलंकृत हो, शंख, चक्र, गदा आदि लेकर विष्णु मूर्ति के अवतार के समान,

गरुड़ पर सवार होकर, रूपणिका के घर के ऊपर मंड़राता आया। शंख बजाकर उसने बड़ी ध्वनि की।

यह ध्वनि सुनकर रूपणिका बाहर आई। अपने घर के ऊपर विष्णु को मानों उसने उड़ते पाया। वह पक्षी के साथ नीचे उतर आया। पक्षी को उसने बाँध दिया और कहा—"मैं हरि हूँ और तुम्हारे लिए आया हूँ।"

रूपणिका ने उसको नमस्कार किया। "भगवान, कृपा करो।" उसे अन्दर ले गई। लोहजंघ ने कुछ समय उसके साथ बिताया। फिर पक्षी पर सवार होकर उड़ता चला गया।

अगले दिन सवेरा होने के बाद, रूपणिका ने सोचा "मैं अब विष्णु की पत्नी हूँ। मनुष्यों से अब बात न करूँगी।"

लड़की में कुछ परिवर्तन देखकर मकरदंष्ट्रा ने पूछा—"क्यों बेटी, ऐसी क्यों हो?" रूपणिका ने जब कुछ न बताया, तो उसकी माँ ने उससे बार बार पूछा। जब उसे बताये बगैर न रहा जा सका, तो रूपणिका ने एक परदा लगवाया। उसके पीछे खड़े

रात जब लोहजंघ आया, तो उससे रूपणिका ने अपनी माँ की इच्छा के बारे में कहा।

"तुम्हारी माँ पापिनी है। इसलिए उसे स्वर्ग में, कपटवेश में पहुँचाना होगा। एकादशी के दिन स्वर्ग के द्वार खोले जाते हैं। तब शिव आदि प्रमथ स्वर्ग में प्रवेश करते हैं। यदि तुम्हारी माँ ने उनकी तरह का वेष पहिना, तो उसे भी स्वर्ग में धकेल दूँगा। प्रमथ का वेष धारण करने के लिए तुम्हारी माँ को, सिर के बाल कटवाने होंगे। मुख के एक ओर काजल और दूसरी ओर कुँकुम पोतकर तैयार रहने के लिए कहो।"

होकर, उसने बताया कि कैसे वह विष्णु की प्रियतमा बनी थी।

पहिले तो बुढ़िया ने, रूपणिका की बात पर विश्वास न किया। जब रात को उसने लोहजंघ को पक्षी पर आते स्वयं अपनी आँखों देखा, तो परदे के पीछे से उसने लड़की से कहा—"बेटी, सचमुच तुम देवियों में शामिल हो गई हो। मैं, चूँकि तुम्हारी माँ हूँ, तुम जैसे भी हो मुझे सदेह स्वर्ग भेजने का कोई उपाय करो। इसकेलिए क्या किया जाये, तुम अपने पति से पूछो।"

जब अगले दिन रात को वह आया, तो रूपणिका की माँ यह सब कर कराकर तैयार थी। लोहजंघ उसे पक्षी पर चढा कर, आकाश में उड़कर, मन्दिर के पास आया। उस मन्दिर के सामने एक ऊँचा पत्थर का खम्भा था और उस पर एक गोल पत्थर था। लोहजंघ ने मकरदंष्ट्र को उस पत्थर पर रखा। "तुम एक क्षण यहाँ रहो, मैं अभी तुम्हारी लड़की पर कृपा करके आता हूँ।" वह वहाँ से चला गया।

एकादशी की रात को, मन्दिर के पास कई लोग जागरण कर रहे थे। लोहजंघ उनके पास गया। आकाश से उसने कहा—"आज तुम पर महामारी आनेवाली है। तुम जाकर हरि का आश्रय लो।"

फिर उसने अपना वेष उतार दिया। मामूली वेष में वह लोगों के बीच में आया। जो होनेवाला था, उसे देखने खड़े हों गया।

यह सुन लोग "महामारी, महामारी" चिल्लाये। "माँ, तुम न गिरो, न गिरो" वे चिल्लाये। मकरदन्ष्ट्र रात-भर उसी पत्थर पर बैठी रही। सवेरा होते ही, राजा को यह खबर मालूम हुई। लोगों का महामारी का भय जाता रहा। यही नहीं, इस भौंडी मकरदन्ष्ट्र को पहिचान कर, वे ज़ोर से हँसे। उसकी हंसी उड़ाने लगे।

रूपणिका को मालूम हो गया कि उसकी माँ तब भी पत्थर के स्तम्भ पर ही थी। उसने आकर, अपनी माँ को नीचे उतरवाया और जो कुछ हुआ था, उसके बारे में वहाँ उपस्थित लोगों को बताया।

"इस मकरदन्ष्ट्र को, जिसने कितनों को ही धोखा दिया है, जिसने धोखा दिया है, अगर उसने अपने आप कह दिया कि वह कौन है, तो मैं उसका राज्याभिषेक कर दूँगा।" राजा ने कहा।

लोहजंघ ने सामने आकर कहा कि उसने ही यह सब नाटक खेला था, उसने अपनी सारी कहानी सुनाई। विभीषण ने, जो शंख, चक्र, गदा दिये थे, वे दिखाये। राजा ने उसका पट्टाभिषेक किया। रूपणिका का उसके साथ विवाह कर दिया।
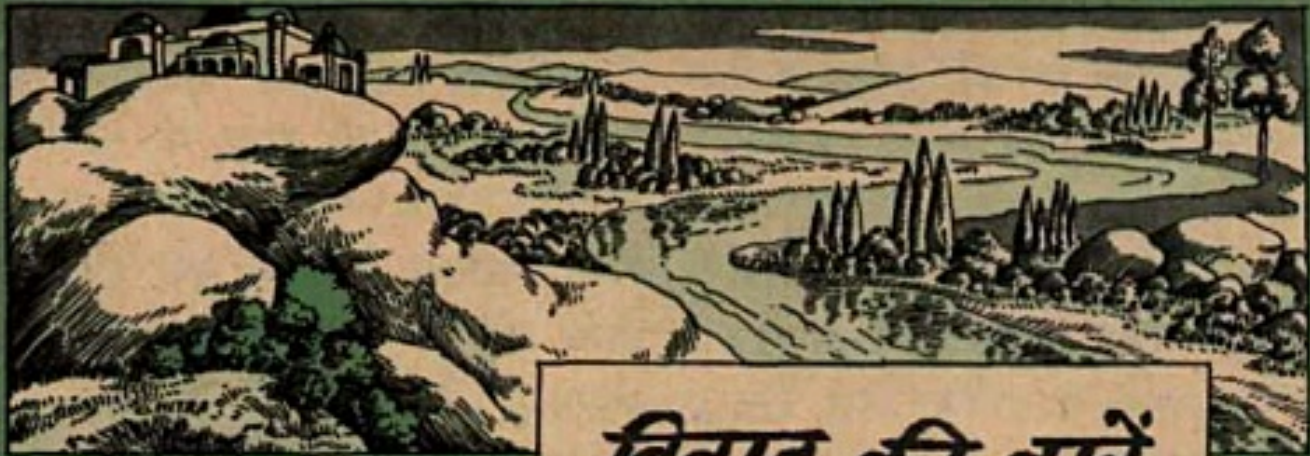
विवाह की बातें

सालों पहिले काश्मीर देश में एक नगर के समीप एक पहाड़ की चोटी पर एक राक्षस एक बड़ा महल बनाकर रहा करता था। उसने लूट मार करके लोगों को सता सताकर, बहुत-सा सोना और ढेर-सी चीज़ें जमा कर लीं। जब वह राक्षस किसी को लूटता, या किसी को मार मूर देता, नगरवासी उतना बुरा न मानते। पर एक दिन जब वह अचानक नगर में आकर किसी से पूछता—"तुम अपनी लड़की का मेरे साथ विवाह करो" और जब लाचार हो, अपनी लड़की की शादी उससे करता, तो वह पत्नी ज्यादह दिन ज़िन्दा न रहती। राक्षस फिर एक और शादी के लिए आता। यह नगरवालों को बड़ा बुरा लगता था, विशेषकर कन्याओं को।

इस प्रकार चौबीस स्त्रियों को खो जाने के बाद, पच्चीसवीं बार शादी करने, राक्षस नगर की ओर निकला। एक गरीब किसान खेत में काम कर रहा था। राक्षस ने उस किसान के पास आकर कहा—"अपनी लड़की के साथ मेरा विवाह करो।" किसान घबरा गया। उसकी मल्लिका नाम की एक लड़की थी। उसे सयानी हुए कुछ समय हो गया था। चूंकि वह गरीब था, इसलिए वह अपनी लड़की की तब तक शादी नहीं कर पाया था।

"मैं परसों तुम्हारे घर खाने पर आऊंगा। तब विवाह के बारे में बात कर लेंगे।" कहकर राक्षस अपने घर चला गया।

किसान ने घर जाकर अपनी लड़की से यह बात कही, तो वह बिल्कुल न घबराई।

अनूपसिंह

"जो मैं कहूं करो और जो मैं कहूं, वह कहना। राक्षस हमारा सम्बन्ध छोड़ सकता है। अगर न भी छोड़े तो भी तुम्हारी गरीबी अवश्य चली जायेगी।" उसने अपने पिता से कहा।

मल्लिका की सलाह पर उसके पिता ने जितना उसके पास पैसा था, उतना खर्चकर खरगोश और पीपा भर अंगूरी शराब मंगवाई। मल्लिका आस पास के घरों में जाकर सैकड़ों सूती कपड़े ले आई और उन्हें दीवारों के सहारे इधर उधर आलों में रख दिया। राक्षस जब भोजन के लिए आ रहा था, तो एक बड़े हँडे में खरगोश के मांस का सालन तैयार किया, राक्षस जब भोजन के लिए बैठा, तो एक तरफ़ माँस और दूसरी तरफ़ शराब का पीपा रखवा दिया।

"मेरे लिए तुमने बड़ा खर्च किया होगा। मैं ज़रा ज्यादह खाता हूं और खाने का बड़ा शौकीन भी हूं।" राक्षस ने कहा।

"इसमें क्या है? जब तक चूहे हैं तब तक खर्च की क्या बात है? यदि चूहे काफ़ी न रहे, तो ज्यादह मसाला वसाला डाल देंगे।" मल्लिका ने कहा।

"तो तुमने चूहों को इतना बढ़िया बनाया है? जितनों से मैंने शादी की, उनमें से किसी एक ने भी तो चूहे नहीं बनाये।" राक्षस ने अपनी होनेवाली पत्नी की मितव्ययिता की मन ही मन प्रशंसा करके कहा। फिर उसने कहा—"शायद तुम कपड़ा बुनना जानती हो?"

मल्लिका ने अपने हाथ का कपड़ा उठाकर कहा—"ये सब मैंने पिछले महीने ही बनाये थे।" जब उसका हाथ कपड़ों के ढ़ेर की ओर गया, तो राक्षस ने सोचा कि वे सब उसी ने काटे और बुने थे।

मल्लिका के बारे में उसकी राय और भी अच्छी हो गई। उसने खाना खतम किया और लोटा भर शराब गटक गया। "बहुत अच्छी है शराब, इसके लिए काफ़ी खर्च हुआ होगा।" उसने किसान से कहा।

"खर्च क्या है? सड़े फल सिवाय शराब निकालने के और किसी काम नहीं आते। यह सब काम हमारी मल्लिका ही कर लेती है।" किसान ने कहा।

"मैं नहीं जानता था कि सड़े फलों से इतनी अच्छी शराब बनती है। हम उन्हें सूअरों को खिला देते हैं। मल्लिका जब गृहस्थी करने आयेगी तो हम भी वह करना छोड़ देंगे। मगर मल्लिका के साथ आप कितनी दहेज़ देने जा रहे हैं?" राक्षस ने कहा।

"मल्लिका ही बड़ी दहेज़ है। अलग से दहेज़ की क्या ज़रूरत है? जब वह ससुराल चली जायेगी, तो मुझे बड़ा नुक्सान होगा। इसलिए जो कोई उससे शादी करेगा, उसे ही मुझे बहुत-सा पैसा देना पड़ेगा। इस शहर के बड़े साहुकार की पत्नी गुज़र गई है। वह फिर शादी करने की सोच रहा है। उसने किसी से कहा

भी था कि अगर मैंने मलिका की उससे शादी कर दी तो वह मुझे बहुत-सा पैसा देगा।" किसान ने कहा।

राक्षस को गुस्सा आ गया। उसने गुस्से में पूछा—"तुम मुझ से ही यह बात कह रहे हो? अगर मैं तुम्हारी लड़की से जबर्दस्ती शादी करना चाहूँ, तो क्या तुम मुझे रोक सकते हो?"

"तो इसका मतलब यह हुआ कि आप मलिका के बारे में कुछ नहीं जानते हैं। वह बड़ी जिद्दी है। जिद पकड़ ली, तो चाहे उसके टुकड़े टुकड़े कर दो, तो भी वह काम न करेगी। समझा बुझाकर मना मुनाकर ही उससे काम लिया जा सकता है।" किसान ने कहा।

"अच्छा अच्छा...." कहकर राक्षस जो कुछ पैसा देना चाहता था, उसने बता दिया—"काफ़ी नहीं है। उससे अगर दुगना दोगे, तभी काम चलेगा।" किसान ने कहा।

राक्षस ने सोचा मलिका को जो खाने और शराब के लिए देगा, वह जल्दी ही मिल जायेगा। कोई नुक्सान न होगा। यह सोचकर उसने जो देने के लिए कहा

गृहस्थी बचत से चल सके, इसलिए मेरे लिए एक नया मकान बनवाना होगा और वह मेरी मर्जी के मुताबिक बनेगा और दूसरी, जब बुढ़िया बत्तखों के पंख निकाले, तो ताजे पंखों से मेरे लिए एक गद्दा बनवाना होगा। मैं जब तक अच्छी तरह सो नहीं लेती, तब तक अच्छी तरह काम भी नहीं कर सकती।"

"गनीमत है कि गहने वहने नहीं मांगे।" राक्षस ने सोचा। मजदूरों को लगाया गया, तो फिजूल मजदूरी के पैसे जायेंगे, इसलिए मल्लिका ने जो घर चाहा उसने उसे स्वयं बनाकर दिया।

इतने में सरदियाँ आ गयीं। मल्लिका ने तोषक के लिए गिलाफ तैयार कर दिया और बर्फ के गिरने की इन्तज़ार करने लगी। जब बर्फ गिरने लगती है, तो उस प्रान्त के लोग कहते हैं—"बुढ़िया बत्तख के पंख खींच रही है।"

जल्दी ही बर्फ गिरने लगी। "बत्तख के पंख गिर रहे हैं—आओ चुन लेना।" मल्लिका ने राक्षस को खबर भेजी।

राक्षस ने बर्फ को गिरते देखा—"भला इसे कैसे चुना जा सकता है?"

था और जो किसान ने मांगा था, उसके बीच की रकम बताई। किसान इसके लिए मान गया। उसे ज़िन्दगी भर आराम से रहने के लिए उतना पैसा काफ़ी था।

"अच्छा, तो वह पैसा लाकर मल्लिका को दीजिये और उससे बात कर लीजिये। अभी वह सो रही है।" किसान ने कहा।

अगले दिन सवेरे एक थैले में रुपये लाकर राक्षस ने किसान को दिये। मल्लिका ने उससे बात करते हुए कहा—"जो कोई मुझसे शादी करना चाहे, उसे मेरी दो इच्छायें पूरी करनी होंगी। ताकि

"अरे बेअक्ल, जाओ फावड़ा लाओ और "पंख" उठाकर, इसमें डालो।" मलिका ने कहा। राक्षस फावड़े से, जब तोषक के गिलाफ में बर्फ डालता, तो आधी उसी समय पिघल जाती। कुछ भी हो शाम तक वह गिलाफ भर गया। मलिका ने उसको सी भी दिया। उस बर्फ की तोषक पर उसने चादर बिछाई। "आज रात, इस पर सोकर देखो, कितना आराम मिलेगा। हम कल शादी कर लेंगे।"

राक्षस थका तो था ही, वह बर्फ के गद्दे पर सो गया। उसने बड़ी कोशिश की, पर शरीर को कहीं से गरमी न मिली। जब वह सवेरे उठा, तो सारे शरीर पर जबर्दस्त दर्द हो रहा था। हड्डियों तक में दर्द था। हिला भी नहीं जाता था और गद्दा आधा पिघल गया था।

"कोई फायदा नहीं। मलिका है तो अक्लमन्द। मगर मैं इस तरह के गद्दे पर सोया, तो जरूर मर कर रहूँगा।" सोचकर, राक्षस जितनी जल्दी उससे हो सका, अपने घर चला गया।

उसे डर लगा कि कहीं मलिका आकर यह न पूछे कि आओ, शादी कर लें।

यह जानते ही कि राक्षस चला गया था, मल्लिका ने अपने पिता को राक्षस के घर भेजा। किसान ने जाकर राक्षस से कहा कि दुल्हिन प्रतीक्षा कर रही है।

"मेरी तबीयत ठीक नहीं है। कह देना कि मैं शादी नहीं कर सकता।" राक्षस ने, किसान के पास अपने नौकर द्वारा खबर भेजी।

उस नौकर ने वापिस जाकर कहा—"किसान पूछ रहा है कि उसकी लड़की को क्या हरजाना देंगे?"

"पहिले ही दहेज दे दिया है। पंखों की तोषक दी है और क्या चाहिए?" राक्षस ने पूछा।

"तुमने पंखों की तोषक को दबा दबा कर पापड़-सा बना दिया है, इसलिए कुछ और पंख चुनकर देने होंगे।" नौकर ने आकर कहा।

"जितनी हमारे पास बत्तखें हैं, उन सबको ले जाकर....जाओ किसी नदी में जा मरो। यदि कुछ और चख चख की, तो कहो कि टुकड़े-टुकड़े करके खा जाऊँगा।" राक्षस ने अपने नौकर से कहा।

जब किसान ने यह बात सुनी, तो वह तुरत निकल पड़ा और जाते जाते, राक्षस की बत्तखें भी लेता गया।

राक्षस गद्दे की "चोट" से न छूट सका। उसने कभी किसी और लड़की से शादी करने के लिए भी न कहा।

परन्तु मल्लिका राक्षस के पैसे से बड़ी रईस हो गई। उसने अपने लिए एक अच्छा पति भी चुन लिया और आराम से रहने लगी।

प्रियतम

एक बार न मालूम क्यों अकबर बादशाह को अपनी किसी बेगम पर गुस्सा आ गया। उस गुस्से में उन्होंने उसको आज्ञा दी कि राजमहल से माइके चली जाये।

बेगम ने बीरबल को बुलवाया और जो कुछ गुजरा था, उसे बता दिया। बीरबल बहुत देर तक सोचता रहा, फिर एक उपाय बताकर चला गया।

बेगम ने अपना सब समान बंधवा दिया। विदा लेने के लिए बादशाह के पास खबर भिजवायी। उसके लिए शरबत भी बनाकर रखा। अकबर आया। फिर उसने उससे माफ़ी माँगी।

"मेरी आज्ञा नहीं बदली जा सकती। आज्ञा का पालन करना ही होगा। पर तुम्हें एक मौका देता हूँ। महल में जो चीज़ सबसे अच्छी तुमको लगती हो, उसे साथ ले जा सकती हो।" अकबर ने कहा।

"खैर, आप अपनी मरजी के मुताबिक ही कीजिये। पर मेरी एक प्रार्थना है। न मालूम इस जन्म में मुझे फिर आपकी सेवा करने का मौका मिलेगा कि नहीं। मैं अपने हाथ से शरबत देती हूँ। उसे आज लीजिये।" बेगम ने कहा।

बीरबल ने दो चाल बतायी थी, उसमें बादशाह आ गया और उसने हाँ कर दिया। बेगम ने वह शरबत एक लोटे में डालकर बादशाह को दिया, बादशाह उसे पी गया। उसमें सोने की दवा थी। बादशाह जल्दी सो भी गया।

बेगम ने अपनी सहेलियों की सहायता से, बादशाह को अपनी एक पालकी में लिटा

दिया और स्वयं एक और पालकी में सवार होकर माइके चली। तभी अन्धेरा हो चुका था, रात-भर उन्होंने सफर किया और सवेरे वे बेगम के पिता के घर पहुँचे। बेगम ने अपने पिता के महल के एक और सुन्दर कमरे में अकबर के सोने का प्रबन्ध कर दिया।

कुछ देर बाद अकबर की नींद टूटी। जब उसने चारों ओर देखा, तो मालूम हुआ कि वह किसी नई जगह पर था। इतने में बेगम वहाँ आयी। "मैं जागा हुआ हूँ या कोई ख्वाब देख रहा हूँ?" बादशाह ने पूछा।

"पूरी तरह जगे हुए हैं। तुरत मुख धोकर नमाज पढ़िये।" बेगम ने कहा।

"यह तो हमारा महल नहीं मालूम होता? हम कहाँ हैं?" बादशाह ने कहा।

"यह हमारे पिता का महल है। आपने ही तो मुझे यहाँ चले आने का हुक्म दिया था।"

"वह तो ठीक है। पर मैं यहाँ कैसे पहुँच गया?" बादशाह ने पूछा।

"भूल गये? आपने ही तो कहा था, जो चीज़ मुझे बहुत प्यारी हो, मैं उसे साथ ले जा सकती हूँ। मुझे आप से अधिक कौन-सी चीज़ प्यारी है? इसलिए आपको ही साथ ले आई हूँ।" बेगम ने कहा।

इस बात से बादशाह का गुस्सा काफ़ूर हो गया। उसकी सूझबूझ देखकर वह बड़ा खुश हुआ। उसके प्रेम पर वह मुग्ध हो गया। वह अपने ससुर के यहाँ कुछ दिन रहा। दिल्ली वापिस जाते जाते अपनी पत्नी को भी ले गया। इसके गुजरने के कुछ दिन बाद बेगम ने बताया कि यह चाल बीरबल ने ही बताई थी। बादशाह ने बीरबल का सार्वजनिक सम्मान किया।

राम शम्बूक को मारकर आयोध्या आये और आते ही, उन्होंने द्वारपालक से भरत और लक्ष्मण को बुलाने के लिए कहा। वे शीघ्र ही राम के पास आ गये।

उनसे राम ने कहा—"भाइयो, मैं एक राजसूय यज्ञ करना चाहता हूँ, जिससे सारे पाप दूर हो जाते हैं। मित्र और चन्द्र ने राजसूय यज्ञ करके ही अमर कीर्ति पाई है। तुम्हारी क्या राय है?"

भरत ने कहा—"तुम्हारे धर्म और कीर्ति में क्या कमी है! राजसूय यज्ञ अगर किया तो बहुत-से राजा नष्ट हो जायेंगे। मान बान के पीछे कितने ही राजा मर मरा जायेंगे। इसलिए व्यर्थ क्यों राजसूय यज्ञ करते हो?"

भरत की बात राम को जंची। उसकी अच्छी सलाह की राम ने मुक्त कंठ से सराहना की।

तब लक्ष्मण ने यूँ कहा—"भाई, सब पापों को मिटा देनेवाला यज्ञ अश्वमेध है। कभी इन्द्र ने जब उस पर एक पाप आ लगा था, बृहस्पति की सहायता से यह यज्ञ किया था और उसके इस प्रकार सब पाप नष्ट हो गये थे।"

लक्ष्मण ने इसका वृत्तान्त यूँ दिया।

कभी वृत्र नाम का बड़ा राक्षस रहा करता था। वह बड़ा धर्मात्मा था। बड़ा ज्ञानी था। तीनों लोकों को प्रेम से देखते हुए, उसने धर्म का पूर्णत: पालन किया। उसके शासन में भूमि ही सब इच्छायें पूरी करती थी। बिना हल चलाये फसलें फलती थीं। फूल फल सभी स्वादिष्ट हुआ करते थे।

तब वृत्र ने तपस्या करने की ठानी। वह अपने बड़े लड़के को राज्य सौंपकर कठिन तपस्या करने लगा। उसकी तपस्या देख देवेन्द्र घबरा गया। उसने विष्णु के पास जाकर कहा—"वृत्र ने पहिले ही तीनों लोक जीत रखे हैं। अब उसने तपस्या भी शुरु कर दी है। यदि उसकी तपस्या पूरी हो गई, तो जब तक लोक हैं, तब तक मैं उसे नहीं जीत सकता। इसलिए अगर तुमने उसका खातमा न किया, तो न मुझे, न देवताओं को ही कोई पूछेगा।"

देवताओं की तरफ़ से जब इन्द्र यों रोया धोया, तो विष्णु ने कहा—"महात्मा, वृत्र मेरा मित्र है। इसलिए मैं उसे नहीं मारूँगा। परन्तु तुम्हारी इच्छा भी ठुकराई नहीं जा सकती। इसलिए वृत्र को मारने का एक उपाय बताता हूँ। मैं अपनी शक्ति के तीन भाग करके, एक भाग तुम्हें और दूसरा तुम्हारे वज्र को और तीसरी भूमि को दे दूँगा। तब तुम वृत्र को मार सकोगे।"

यह सुन इन्द्र, देवता बड़े खुश हुए। वे उस वन में गये, जहाँ वृत्र तपस्या कर रहा था। तब वृत्र उनको इस प्रकार तपस्या के कारण चमकता नजर आया, जैसे उसकी ज्योति से मानों तीनों लोक ही जल उठेंगे। देवता उसको देखकर घबरा

उठे। इन्द्र ने अपने वज्र को दोनों हाथों से उठाया और वृत्र के सिर को काट दिया।

तुरत ब्रह्म हत्या का पाप इन्द्र को लगा। वह बड़ा दुःखी हुआ। तब देवताओं ने विष्णु से कहा—"देव! मारा तुमने वृत्र को है और ब्रह्म हत्या का पाप इन्द्र को लगा है। उसको कैसे छुड़ाया जा सकता है?"

"इन्द्र ने यदि अश्वमेध यज्ञ किया तो ब्रह्म हत्या का पाप चला जायेगा और वह यथापूर्व देवेन्द्र हो जायेगा।" विष्णु ने देवताओं से कहा।

यह सलाह सुनकर देवता बृहस्पति आदि मुनियों को साथ लेकर, इन्द्र के पास गये। इन्द्र निश्चेत-सा हो, भ्रान्त, भयभीत-सा एक जगह पड़ा था। इन्द्र को साथ ले जाकर उन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया, तब उसका ब्रह्म हत्या का पाप जाता रहा।

लक्ष्मण ने जब यह कहानी सुनाई, तो राम ने अश्वमेध यज्ञ की महिमा के बारे में एक और कहानी सुनाई।

किसी समय कर्दमप्रजापति का लड़का इल बह्लीक देश पर राज्य किया करता था। देवता, राक्षस, नाग, यक्ष, गन्धर्व, सभी उसको आदर की दृष्टि से देखते थे।
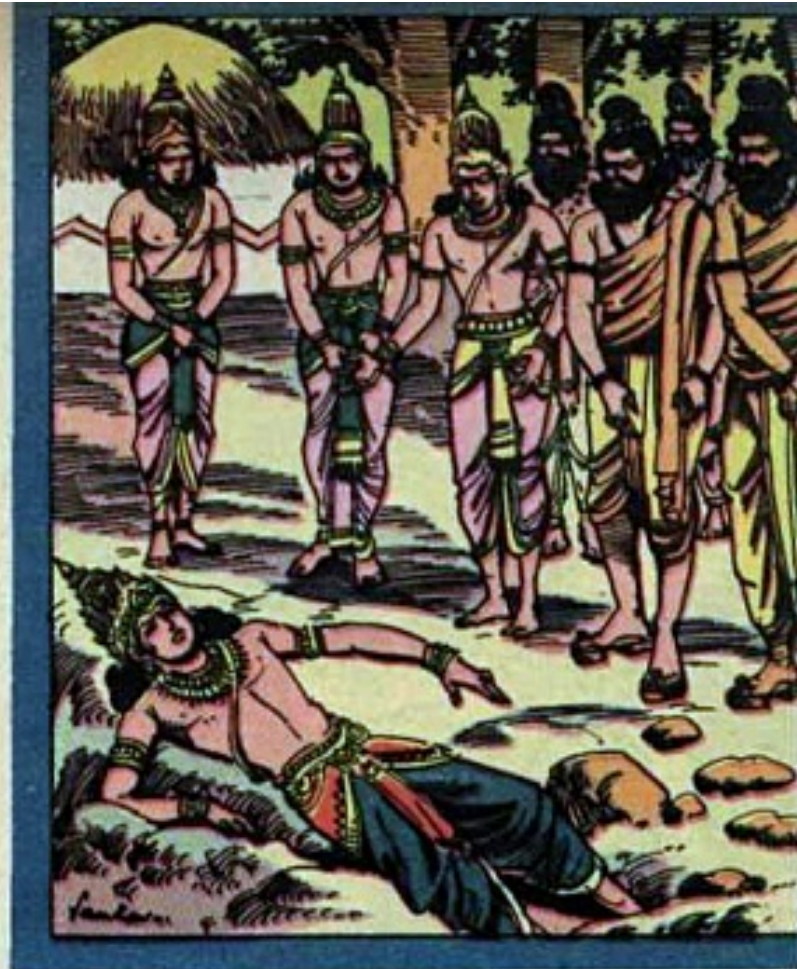
चैत्र मास में एक बार, इल महाराजा, अपने लोगों को साथ लेकर, जंगल में शिकार खेलने गया। कई जानवर मार दिये, पर उसका शिकार का नशा न गया। वह शिकार खेलता खेलता उस जगह गया जहाँ कुमारस्वामी पैदा हुआ था। वहाँ, पार्वती और परमेश्वर और उनके लोग बाग थे। उस पर्वत प्रदेश की यह विशेषता थी कि वहाँ, जन्तु, पक्षी और पेड़, सभी स्त्री थे।

वहाँ पहुँचते ही हल और उसके नौकर सब स्त्री बन गये। अपने में वह परिवर्तन देख हल को बड़ा डर लगा। शिव के पैरों पड़कर, उसने उसकी रक्षा माँगी।

"सिवाय स्त्रीत्व के हटाने के कुछ और माँगो।" शिव ने कहा।

हल ने शिव से कोई और वर न माँगकर पार्वती से प्रार्थना की। पार्वती को उस पर दया आ गई। उसने वर दिया कि वह एक मास स्त्री रहे और दूसरे मास पुरुष और जब वह स्त्री हो, तो वे घटनायें याद न रहें, जो उसके पुरुष काल में गुजरी थीं और जब वह पुरुष हो, तो स्त्री काल की घटनायें याद न रहें। हल, हला बन गई। उसके सैनिक स्त्री बन गये और वे यथेच्छ जंगल में घूमने फिरने लगे।

उस पर्वत के पास, यहाँ वे स्त्री बना दिये गये थे एक जलाशय था। वहाँ, चन्द्र का लड़का, बुध आश्रम बनाकर तपस्या कर रहा था। वह भरी जवानी में था और बड़ा सुन्दर था।

हला और उसके साथ की स्त्रियाँ, जलाशय में, उतर कर पानी कल्लोलित करने लगीं। बुध ने उनको देखा। वह हला पर मुग्ध हो गया। उसे लगा कि तीनों लोकों में उससे अधिक कोई सुन्दर न था।

हला की साथ की कुछ स्त्रियों को उसने अपने आश्रम में बुलाया। "वह कौन है? वह इस प्रान्त में क्यों आई है? सच बताओ।"

"वह हमारी नायिका है। उसके कोई पति नहीं है। हमें साथ लेकर यूँ, सारा जंगल घूम रही है।" उन स्त्रियों ने बुध को साफ साफ बताया।

"तुम सब इस आश्रम में कन्द मूल खाते रह जाओ। यहाँ के किंपुरुष तुम्हारे पति हो जायेंगे।" बुध ने उनसे कहा। वे सब चली गईं।

फिर बुध ने हला से कहा—"मैं चन्द्र का लड़का हूँ। मेरा नाम बुध है। मै, तुम्हें भक्ति और स्नेह से देखूँगा। तुम यहीं रह जाओ।"

"जैसा तुम चाहो।" हला ने कहा।

दोनों ने खुशी खुशी एक महीना बिता दिया। एक दिन सवेरे हला, हल महाराज के रूप में बिछौने से उठी। क्या हुआ था, उसे याद न था।

जलाशय में 'बुध' हाथ उठाकर तपस्या कर रहा था। हल ने उसके देखकर कहा—"मैं अपने सैनिकों के साथ आया था, वे सब कहाँ चले गये हैं, पता नहीं लग रहा है।"

"राजा! इस तरह का आँधी पानी आया कि तुम्हारे सब लोग मर मरा गये। तुमने स्वयं आश्रम में शरण ले ली थी। दुःखी मत हो, तुम यहाँ आराम से रह सकते हो।" बुध ने कहा।

हल अपने सैनिकों के बारे में सुनकर बड़ा दुःखी हुआ। उसने कहा—"मै अब राज्य नहीं करना चाहता। अगर आप अनुमति दें, तो मै अपने बड़े लड़के, शशिबिन्दु का पट्टाभिषेक करके तुरत वापिस आ जाऊँगा।"

"हल महाराज! क्यों तुम यूँ चिन्तित हो? तुम एक वर्ष यहीं रहो। मैं तुम्हारा भला करूँगा।" बुध ने कहा। हल इसके लिए मान गया।

एक मास तक स्त्री और दूसरे मास पुरुष के रूप में, हल बुध के साथ गृहस्थी

करता रहा और जब वह स्त्री रूप में था, तो उसने बुध के पुत्र को भी जन्म दिया।

फिर बुध ने संवर्त, च्यवन, प्रमोद, दुर्वासा आदि अन्य ऋषियों को बुलवाया। उनका इला से परिचय कराया और उनसे उसको यथापूर्व बना देने का उपाय पूछा। उसी समय इल का पिता कर्दम और कुछ मुनि भी आ गये। जिस जिसको, जो सूझा उसने बताया पर कर्दम ने कहा—"यदि उसके लड़के का भला करना है, तो केवल अश्वमेध यज्ञ ही एक मात्र मार्ग है। उसकी सलाह के अनुसार सबने मिलकर अश्वमेध यज्ञ किया।" इल महाराज का स्त्रीत्व जाता रहा। यज्ञ की पूर्ति के समय शिव स्वयं प्रत्यक्ष हुए और उन्होंने इल महाराजा को यूँ अनुगृहीत किया।

परन्तु फिर इल बह्लीक देश वापिस न गया, वह मगध देश में प्रतिष्ठान पर राज्य करता वहीं रह गया। उसका लड़का शशिबिन्दु बह्लीक देश पर राज्य करता रहा और बुध से जो इला के पुत्र हुआ था, उसका नाम पुरूरव था, वह इल महाराज के बाद प्रतिष्ठान का राजा बना।

राम ने यह कथा अपने भाइयों को सुनाई। लक्ष्मण को भेज कर, उन्होंने अपने पुरोहित वशिष्ठ, वामदेव, जबाली आदि को बुलवाया और उनको बताया कि वह अश्वमेध यज्ञ करना चाहते थे। वे यह जानकर बड़े प्रसन्न हुए।

अश्वमेध यज्ञ के लिए तैयारियाँ ज़ोर शोर से होने लगीं।

लक्ष्मण ने दूतों द्वारा किष्किन्धा में रहनेवाले सुग्रीव को और लंका में रहनेवाले विभीषण को सपरिवार, आकर अश्वमेध यज्ञ में उपस्थित होने के लिए निमन्त्रण भेजा। सभी राम के हितैषियों के पास
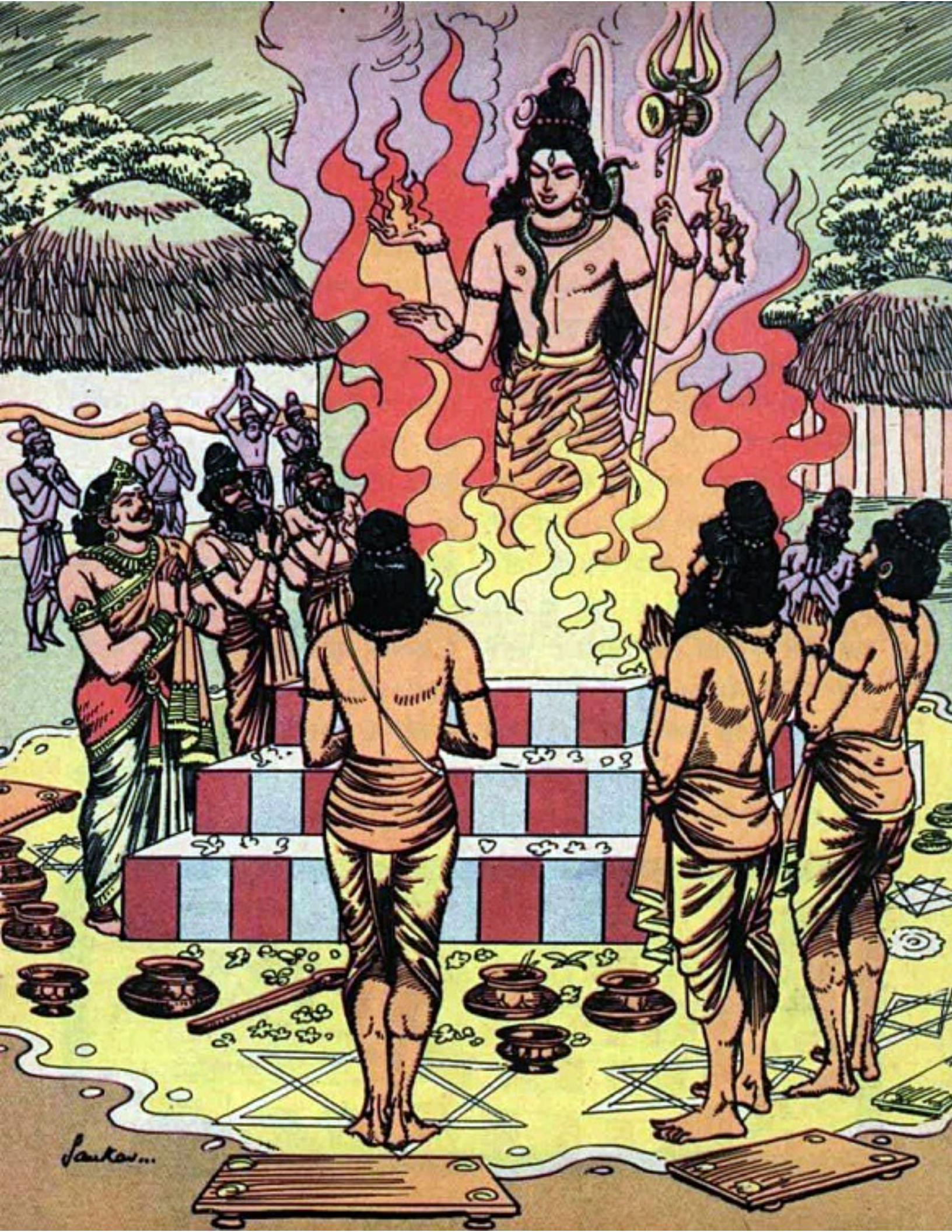
निमन्त्रण पत्र भेजे गये। कई देशों से ब्राह्मण, ऋषि, गृहस्थी, गायक, नट, नर्तक बुलाये गये।

गोमती नदी के तट पर नैमिश वन में यज्ञशाला बनाई गई। हज़ारों गाड़ियों में धान्य, नमक और चन्दन लाया गया। करोड़ों का सोना आया। रसोइये आये। कारीगर आये। राम के अन्तःपुर से उसकी मातायें और सोने की सीता, भरत के साथ यज्ञ स्थल पर आयीं। निमन्त्रितों के रहने की व्यवस्था अलग की गई थी।

इधर ये व्यवस्थायें हो गई थीं और उधर राम ने एक घोड़ा छोड़ा। उसके साथ ऋषियों और लक्ष्मण को भेजा।

जो राजा यज्ञ देखने आये थे, वे राम के लिए उपहार लाये। उनकी आवभगत भरत शत्रुघ्न ने की। ब्राह्मणों की देखभाल सुग्रीव के वानरोंने और ऋषियों का सत्कार विभीषण के राक्षसों ने किया।

यज्ञ बड़े वैभव के साथ हुआ। किसी को ऐसा न अनुभव हुआ, जैसे कहीं कोई त्रुटि रह गई हो। भोजन के समय, इस से पहिले कि लोग माँगते, उनके मन पसन्द की चीज़ उनके पत्तल पर आ जाती। क्या सोना, क्या धन, क्या रत्न, क्या वस्त्र जिसने जो माँगा, उसे वह दे दिया गया। इन चीज़ों के ढ़ेर लगे हुए थे और रात दिन वे लोगों में बाँटे जा रहे थे। कहा गया कि उस प्रकार का यज्ञ न कभी इन्द्र ने करवाया था न कुबेर ने, न यम ने ही, वानरों और राक्षसों को खूब काम था। याचकों को देने का काम उनका ही था। एक वर्ष तक यूँ यज्ञ चला। तब वह समाप्त हुआ।

अरण्य पुराण

[२]

शेरखान ने गरजकर कहा—"क्या मुझे अपनी ही चीज़ के लिए एक कुत्ते के दरवाज़े पर खड़ा होना पड़ेगा ? जानते हो शेरखान कौन है ?"

मेड़ियानी ने आगे आकर कहा—"जानते हो राक्षसी की खिताबवाली मैं कौन हूँ ? यह आदमी का बचा मेरा है। हाँ, मेरा है। वह नहीं मरेगा। वह झुन्ड के साथ रहेगा। उसके साथ भागेगा, शिकार खेलेगा। अबे अन्त में वह तेरा ही शिकार करेगा। अब, जा लंगड़ता लंगड़ता अपनी माँ के पास जा।"

मेड़िया चकित रह गया। जब तक उसकी पत्नी ने मुख खोला, तब तक उसे याद न आया था कि झुन्ड में उसकी पत्नी राक्षसी कहलाई जाती थी।

शेरखान ने सोचा कि मेड़िये का तो मुकाबला किया जा सकता है पर मेड़ियानी का सामना करना उसके बस की बात न थी। उसके पास समान बल था, यह सोच शेरखान ने अपना सिर पीछे हटाया। कुछ गुर्राया। गुफा के बाहर उसने कहा—"अरे कुत्ते के अपने घर भोंकने में क्या रखा है ? मैं भी देख लूँगा। इस आदमी के लड़के के पालने के बारे में तुम्हारा झुण्ड क्या कहता है ? वह मेरा है और कभी न कभी वह मेरे मुख में आकर रहेगा। याद रखना।"

"शेरखान ने एक बात सच कही है। इस बचे को झुण्ड को दिखाना होगा। क्या इसे रखोगे ?" मेड़िये ने पूछा।

अन्तिम पृष्ठ

"रखूँगी ! रात के समय भूखा नंगा आया है। कुछ भी डर नहीं है। वह लंगड़ा इसे मारकर बामन गंगा वापिस चला जाता। गाँववाले उसके लिए खोजते खोजते हमारे घर बरबाद करके हमसे बदला लेते। नहीं रखूँगी ? जरूर रखूँगी। अरे हिलो मत मुन्ने। इसका नाम मौवली रखेंगे। अरे मौवली, जब तुम बड़े हो जाओ तब इस शेरखान का उसी तरह शिकार करना जिस तरह उसने तुम्हारा किया है।" भेड़ियानी ने कहा।

"खैर न मालूम हमारा झुण्ड क्या कहे ?" भेड़िया ने कहा।

वन के नियमों के अनुसार विवाहित भेड़िया अपने झुण्ड को छोड़कर अलग घर बसा सकता है। पर बच्चे जब अपने पैरों पर खड़े होने लगें, तो उसे उन्हें झुण्ड के सामने ले जाना होता है। झुण्ड की बैठक हर महीने पूर्णिमा की रात को होती थी। तब दूसरे भेड़िये उनसे परिचय करते थे। इस "संस्कार" के बाद बच्चे स्वतन्त्र हो फिर सकते थे। यदि झुण्ड का कोई बड़ा भेड़िया कभी उनको मारता और वह पकड़ा जाता, तो उसको मौत की सजा दी जाती।

जब उसके बच्चे इधर उधर घूमने लगे, तो भेड़िया उनको, मौवली को और अपनी पत्नी को, सभा की रात को, रूपा पर्वत पर ले गया, उसकी चोटी पर असंख्य बड़े पत्थर थे। उनके पीछे सैकड़ों भेड़िये छुप छुपा सकते थे।

इस भेड़िया के झुन्ड का नेता अकेला, नाम का भेड़िया बड़ा बलवान और बुद्धिमान था। वह शिखर पर लेटा हुआ था। नीचे चालीस भेड़िये, हर तरह के और हर रंग के भेड़िये बैठे थे। उनमें हरिण को अकेला पकड़ सकनेवाले छोटे छोटे भेड़िये भी थे। अकेला, इस झुन्ड का एक वर्ष से सरदार था। वह जवानी में दो बार पकड़ा गया था। एक बार खूब पिटा भी था। वह मनुष्यों का आचार व्यवहार अच्छी तरह जानता था।

सभा में बड़े-बड़े भाषण नहीं होते थे। जब माँ बाप घेरा बनाकर बैठ जाते हैं, तो बच्चे उसके अन्दर खेलते कूदते हैं। एक बूढ़ा भेड़िया चुपचाप उठता है और बच्चे को ध्यान से देखकर चला आता है। कई बार मादा भेड़िया, ताकि उसके बच्चे को और अच्छी तरह देख

सकें, उसको उठाकर ऐसी जगह रख आती है, जहाँ अच्छी तरह चान्दनी पड़ रही हो। चोटी पर से अकेला कहता— "मेड़ियो! अच्छी तरह देखो। तुम कानून तो जानते ही हो।"

आखिर मौवली का परिचय करने का समय आया। मेड़ियानी के गले के बाल खड़े हो गये। मेड़िया ने मौवली को अन्दर धकेला। मौवली वहाँ चमकने-सा लगा। चान्दनी में चमकनेवाले पत्थरों से खेलने लगा।

अकेला ने अपने पैरों पर से सिर बिना उठाये कहा—"अच्छी तरह देखो। अच्छी तरह देखो।"

पत्थरों के पीछे से गर्जन सुनाई दिया। फिर शेरखान की आवाज़ यूँ सुनाई दी— "यह लड़का मेरा है। इसे मुझे दे दो। स्वतन्त्र लोगों को मनुष्य के बच्चे से क्या काम?"

अकेले के कान तक न हिले। उसने कहा—"मेड़ियो, अच्छी तरह देखो। स्वतन्त्र लोगों को, अपनी आज्ञा से मतलब, भला ऊपरवालों की आज्ञा से क्या मतलब?"

कई एक साथ गुर्राये। एक साथ वाले ने शेरखान का प्रश्न ही अकेले से पूछा—"स्वतन्त्र प्रजा को एक मनुष्य के लड़के से क्या काम?"

वन में एक और नियम है। यदि एक झुन्ड में, एक बच्चे के अपनाने में कोई मतभेद हो, तो झुन्ड के दो सदस्य उसकी सिफारिश कर सकते हैं। पर उनमें बच्चे के "माँ बाप" नहीं होने चाहिए।

"इस बच्चे की कौन सिफारिश करते हैं।" अकेले ने पूछा। (अभी है)

५६. स्टोन हैन्ज

इङ्गलेन्ड के सेल्सबरी मैदान के ये प्रस्तर १७०० वर्ष ईसा से पूर्व बनाये गये थे। स्टोन हेन्ज का मतलब है, लटकनेवाले पत्थर। अनुमान किया जाता है कि सूर्य के उदय के कोण के आधार पर ऋतुओं के निर्णय के लिए ये बनाये गये थे। जो पत्थर लेटे हुए हैं, वे ऐसे बनाये गये हैं कि वे खड़े पत्थरों पर उतारे जा सकते हैं। एक एक पत्थर ३० फीट ऊँचा है और भार ५० टन से ऊपर है। इनमें से बहुत से पत्थर वेल्स से लाये गये हैं, जो १८० मील दूर है। बाकी पत्थर उसी प्रान्त के हैं। वहाँ के पत्थर वहीं गढ़े गये। घोड़े के नालों की आकृति के पत्थरों की दो पंक्तियाँ तैय्यार कीं, इनके बीच के पत्थर को "भगवान की वेदिका" कहा जाता है। स्टोन हेन्ज के बनानेवाले, कई का कहना है, भूमध्यसागरवर्ती लोग थे और वे अग्नि की आराधना करते थे।

Photo by Madan Gopal

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

गागर में सागर !

प्रेषिका :
सुमनकुमारी - भोपाल

Photo by Ranbir S. Bakhshi

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

गागर का सागर !!

प्रेषिका :
सुमनकुमारी - भोपाल

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अक्तूबर १९६६ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें !

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ अगस्त १९६६ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वडपलनी, मद्रास-२६

अगस्त – प्रतियोगिता – फल

अगस्त के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषिका को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **गागर में सागर !**

दूसरा फ़ोटो : **गागर का सागर !!**

प्रेषिका : **सुमनकुमारी,**

६५७/ए ४, बी. सेक्टर-पिपलानी, एच. इ. एल. भोपाल (म.प्र.)

Printed by B. NAGI REDDI at The B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'